डाक पंजीयन क्रमांक 317/2019-21

हिन्दी साप्ताहिक

RNI: MPHIN/2012/48965

विक्रांत भैरव दर्शन

वर्ष 08 अंक 9 | उज्जैन, शुक्रवार 2 अगस्त से 8 अगस्त 2019 | पृष्ठ 8, मूल्य 1 रुपया

2 » पुण्य की है जिसको पहचान, उसे ही पापों का अनुमान सदाचारों.....

4 » डॉ.धनंजय वर्मा की बहुचर्चित पुस्तक का 46 वर्षों बाद.....

6 » राई में बनेगा देश का तीसरा खेल विश्वविद्यालय.....

हवाई जहाज की तरह अब रेलों में भी ब्लैक बॉक्स

नई दिल्ली। हवाई जहाज की तरह अब रेल हादसा होने की स्थिति में हादसे के असल कारणों की सटीक जानकारी सरकार को मिल पाएगी। इन जानकारियों की मदद से सरकार दुर्घटनाओं को कम करने के लिए तैयारी करेगी। इसके लिए सरकार ने देशभर की ट्रेनों में लोको कैब ऑडियो वीडियो रिकार्डिंग सिस्टम (एलसीबीएआर) लगाने की शुरूआत कर दी है।

रेल मंत्रालय के मुताबिक अब तक 32 ट्रेनों में यह तकनीक लगाई जा चुकी है। इनमें 25 डीजल ओर 7इलेक्ट्रिक ट्रेनें शामिल हैं। जल्द ही इन्हें 470 लोकोमोटिव ट्रेनों में लगाया जाएगा। मंत्रालय के मुताबिक एलसीवीएआर, हवाई जहाज में लगे ब्लैक बॉक्स जैसा है। अब तक मंत्रालय के पास ऐसा कोई एडवांस सिस्टम नहीं था। सूत्रों के मुताबिक ब्लैक बॉक्स 11 हजार सेल्सियम के तापमान को एक घंटे तक सहन कर सकता है। जबकि 260 डिग्री सेल्सियस के तापमान को 10 घंटे सहन कर सकता है। देश में 1953 -54 में हवाई हादसों की संख्या बढ़ने के बाद इस व्यवस्था करे हवाई जहाजों में लागू किया गया था। इसकी मदद से किसी भी प्रकार का हादसा होने को स्थिति में सभी जानकारियां रिकॉर्ड हो जाती हैं। विमान में प्रयोग होने वाले ब्लैक बॉक्स में विमान की दिशा, ऊंचाई, ईंधन, गति, हलचल और केबिन के तापमान समेत 88 चीजों की जानकारी रहती है। इसमें करीब 25 घंटे तक की रिकॉर्डिंग की जा सकती है।

तीन तलाक विधेयक पास

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने मंगलवार को तीन तलाक बिल राज्यसभा से भी पारित करा कर एक ऐतिहासिक सफलता हासिल की। उच्च सदन में बहुमत नहीं होने के बावजूद सरकार ने तीसरे प्रयास में इस बिल को 84 के मुकाबले 99 मतों से पास कराया। इस बिल को लोकसभा पहले ही पास कर चुकी है। इस तरह मुस्लिम महिला विवाह अधिकार संरक्षण बिल, 2019 के कानून बनने का रास्ता साफ हो गया है। यह कानून तीन तलाक को अपराध मानने तथा उसके लिए पति को तीन साल कैद की सजा का प्रावधान करने वाले अध्यादेश की जगह ले लेगा। नए कानून में भी ये प्रावधान होंगे। अध्यादेश 21 फरवरी को जारी किया गया था।

अब मध्यप्रदेश टाइगर स्टेट

भोपाल। देश में अब 2967 टाइगर हैं, जो कि 2014 की तुलना में 741 ज्यादा हैं। सबसे ज्यादा बढ़त मध्यप्रदेश में

हुई। यहां बीते चार साल में बाघों की संख्या 308 से बढ़कर 526 हो गई है। देश में जहां बाघों की संख्या में 33 फीसदी की बढ़ोतरी हुई, वहीं म.प्र.में 70 फीसदी । यह बाकी देश की तुलना में 37% ज्यादा है। सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व टाइगर दिवस पर 2018 में 28 पैरामीटर्स पर की गई बाघों की गणना के आंकड़े जारी किए। इनके मुताबिक वर्ष 2014 में देश के 20 राज्यों में 2226 बाघ थे। इनकी संख्या अब 2967 हो गई है। देश ने बाघों की संख्या को दोगुना करने का लक्ष्य 4 साल पहले हासिल कर लिया है।

नोबेल पुरस्कार विजेता भौतिकी विज्ञानी श्रिफर का देहांत

टालाहसी। सुपरकंडिक्टिविटी की महत्वपूर्ण थ्योरी देने के

लिए साल 1972 में भौतिकी विज्ञान के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित जॉन रॉबर्ट श्रिफर का निधन हो गया। वह 88 वर्ष के थे। परिवार के सदस्यों ने बताया कि श्रिफर का फ्लोरिडा के टालाहसी में शनिवार को एक नर्सिंग केंद्र में नींद में ही निधन हो गया। उनके परिवार में तीन बच्चे हैं। श्रिफर को जॉन बार्डीन और लियोन कूपर के साथ बीसीएस थ्योरी विकसित करने के लिए भौतिकी विज्ञान में संयुक्त रूप से नोबेल पुरस्कार मिला था। यह सुपरकंडिक्टिविटी की पहली सफल माइक्रोस्कोपिक थ्योरी मानी जाती है।

महिलाएं चलाएंगी ई-रिक्शा

भोपाल। अब इंदौर में महिलाएं ई-रिक्शा चलाएगी। इस पॉयलेट प्रोजेक्ट के तहत सरकार उनको खर्च के 40 फीसदी की आर्थिक मदद भी करेगी। शुरूआत में इंदौर -भोपाल में 50-50 ई-रिक्शा दिए जाएंगे। यदि यह प्रोजेक्ट सफल रहता है तो ग्वालियर -जबलपुर और उज्जैन में भी इसे लागू किया जाएगा। मुख्यमंत्री कमलनाथ ने पॉलीटिकल कैबिनेट कमेटी की बैठक में इस प्रोजेक्ट को हरी झंडी दी।

अपनी मातृभूमि की धूल माथे पर तिलक की तरह लगा लेते थे हैदर रजा- अशोक वाजपेयी

रजा की तीसरी बरसी पर नर्मदा किनारे 5 दिवसीय सांस्कृतिक समारोह

मंडला। दुनिया में मशहूर हुए चित्रकार एस.एच.रजा की तीसरी बरसी पर उनके जन्मस्थान मध्यप्रदेश के मंडला जिले में पांच दिन का सांस्कृतिक समारोह रजा फाउंडेशन द्वारा 19 से 23 जुलाई तक में नर्मदा जी के

किनारे किया गया, जिसमें चित्रकला की कार्यशाला, कवि सम्मेलन और आदिवासी नृत्य वगैरह के कार्यक्रम हुए है। 20 जुलाई की संध्या जबलपुर के कवि मलय, बाबुषा कोहली, बस्ती के अष्टभुजा शुक्ल, भोपाल की तेजी ग्रोवर और अंबिकापुर के महेश वर्मा ने काव्यपाठ किया। 21 जुलाई को दलदली के लपटूसिंह बैगा दल ने आदिवासी नृत्य पेश किए। 22 और 23 जुलाई को मंडला और डिंडोरी के सोनसाय बैगा और अर्जुन धुरवे के दल ने बाघिन कर्मा नृत्य पेश किए। इसके अलावा खैरागढ़ के वरिष्ठ चित्रकार योगेंद्र त्रिपाठी के संयोजन में छात्रों के लिए एक क्ले वर्कशॉप तथा स्थानीय नागरिकों के लिए 'छाते पर रंग' कार्यक्रम आयोजित किया गया।

रजा फाउंडेशन के प्रमुख अशोक वाजपेयी के शब्दों में ''फाउंडेशन का प्रयत्न यह है कि मंडला के नागरिक इस उत्सव के माध्यम से स्वयं मंडला की कला-संपदा को पहचानें और उस विभूति को भी जिसकी आज विश्व उपस्थिति है। फाउंडेशन की कोशिश है कि जल्दी ही मंडला में ऐसा कुछ वातावरण बन जाए, जहां गोष्ठियां, सर्जनात्मक अडडेबाजी प्रदर्शनियां आदि नियमित रूप से हो सकें।'' मंडला के बाबरिया वनग्राम में 1922 में जन्में कालजयी आधुनिक कलाकार रजा को याद करते हुए वाजपेयी बताते हैं कि यहां आने पर जिले की सीमा पर ही कार रूकवाकर वे ''सिर धरती पर टेककर अपनी मातृभूमि को प्रणाम करते थे और थोड़ी सी धूल अपने माथे पर तिलक की तरह लगा लेते थे। नर्मदा जी के किनारे मंडला में नदी को इसी तरह प्रणाम करते थे। उनके लिए मंडला और नर्मदा जी हमेशा प्रणम्य रहे।''

खूब मिलेंगी नौकरियां अगले छः महीने में

नई दिल्ली। अगले छः महीने तक कंपनियां नए कर्मचारियों की भर्ती करने को लेकर काफी उत्साहित हैं। इसमें ज्यादातर भर्ती तीन से पांच साल का अनुभव रखने वाले लोगों के दायरे में होगी। रोजगार क्षेत्र की प्रमुख साइट नौकरी डॉट कॉम के हर छःमाही होने वाले सर्वेक्षण के मुताबिक, जिन लोगों से बात की गई उनमें से 78 प्रतिशत ने उम्मीद जताई है कि अगले छः माह के दौरान नियुक्ति गतिविधियों का परिदृश्य बेहतर रहेगा। एक साल पहले इसी छःमाही में 70 प्रतिशत ने ऐसी उम्मीद जताई थी। यह सर्वेक्षण जुलाई से दिसंबर 2019 की अवधि के लिए किया गया। हालांकि, इसमें रोजगार सृजन को लेकर सकारात्मक संकेत मिलता है लेकिन नियोक्तओं को बेहतर प्रतिभा को पाने को लेकर अभी भी कुछ चिंता है। सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 41 प्रतिशत नियोक्ताओं का मानना है कि अगले छः माह के दौरान प्रतिभाओं की कमी सामने आ सकती है। इससे पहले 50 प्रतिशत ने ऐसी कमी होने की बात कही थी।

बीमारी से नहीं, सड़क दुर्घटना से ज्यादा जान गंवाते हैं, भारत में अधिकतर बच्चे और युवा

विश्व व्यवस्था संगठन की रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में अधिकतर बच्चे और युवा बीमारी से नहीं,बल्कि सड़क हादसों की वजह से अपनी जान गंवाते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में 2016 में सड़क दुर्घटना में 13.5 लाख लोगों की मौत हुई और मरने वाले हर नौ लोगों में से एक भारतीय है। वहीं 5 से 29 वर्ष के लोगों की मौत की बड़ी वजह सड़क हादसों में घायल होना है। सड़क सुरक्षा पर आधारित वैश्विक स्थिति रिपोर्ट में भी भारत की स्थिति सबसे खराब बताई गई है। 2018 में जारी विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया भर में होने वाली बीस मौतों में से एक की मौत का कारण शराब है। हमारे देश में सड़कें बनती हैं, मगर कुछ ही दिनों बाद उनमें गड्ढें पड़ जाते हैं। यानी कहीं न कहीं सड़कें बनाने में लागत में कटौती की जाती है। मानक के अनुरूप लागत का इस्तेमाल नहीं होता, यानी भ्रष्टाचार होता है। के. एस. राधाकृष्णन समिति की रिपोर्ट में भी कहा गया है कि सड़कों पर इतनी अधिक मौतों के आंकड़े सड़कों की देखरेख के लिए जिम्मेदारी अधिकारियों की लापरवाही के संकेत हैं। यही वजह है कि एक बार की बारिश में ही सड़कें गड्ढ़ो से भरी और सरकारी दावों को मुंह चिढ़ाती नजर आती हैं। वहीं यातायात नियमों की अनदेखी की जाती रही है। यातायात अमले में भ्रष्टाचार व्याप्त है। इसी का फायदा उठा कर लोग यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं और पैसे देकर छूट जाते हैं।वहीं हादसे के शिकार लोगों की मदद के लिए पुलिस के पचड़ों से बचने की वजह से भी लोग घायलों की मदद करने के लिए सामने नहीं आते हैं।

दोहा में सम्पन्न 'कतर उत्सव' में डॉ. अर्पणा शर्मा ने की प्रतिभागिता

मुम्बई। उज्जैन में पली-बढ़ीं और मुम्बई में बसीं प्रख्यात लेखिका और मानव संसाधन नेत्री डॉ. अर्पणा शर्मा ने 11 जुलाई और 12 जुलाई को दोहा में आयोजित कतर कल्चर और लिट्रेचर फेस्टिवल के प्रथम संस्करण में प्रतिभागिता की। समारोह में मीकासिंह द्वारा दर्शनीय प्रस्तुति की गई और अनेक पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। समारोह में चेतन भगत, अदिति बैनर्जी,पीयूष मिश्रा, नितिन सोनी, अम्बिका मिश्रा, कुलप्रीति यादव सहित अनेक प्रसिद्ध लेखक सम्मिलित हुए थे। डॉ. अर्पणा शर्मा ने 'इम्पावर

वुमेन इम्पावर सोसायटी' विषय पर आयोजित विचारोत्तेजक परिचर्चा का संचालन करते हुए भारत और कतर के अनुराग चौहान, लक्ष्मी अग्रवाल, रश्मि अग्रवाल और शिरीन डीसूजा से सवांद किया।

डॉ. अर्पणा ने बताया है कि वर्ष 2019 को भारत और कतर मैत्री वर्ष के रूप में मना रहे हैं। इसी प्रसंग में दोहा में 'कतर उत्सव' का आयोजन किया गया था। इस उत्सव में सम्मिलित होना मेरे लिए एक विशेष और ऊर्जा भरा अनुभव रहा। उत्सव का संयोजन क्यू एण्ड एसोसिएट्, नई दिल्ली की सी.ई.ओ. रूही गांगुली द्वारा किया गया था।

पुण्य की है जिसको पहचान, उसे ही पापों का अनुमान सदाचारों से जो अनभिज्ञ, दुराचारों में वो अनजान

-मनोज कुमार श्रीवास्तव

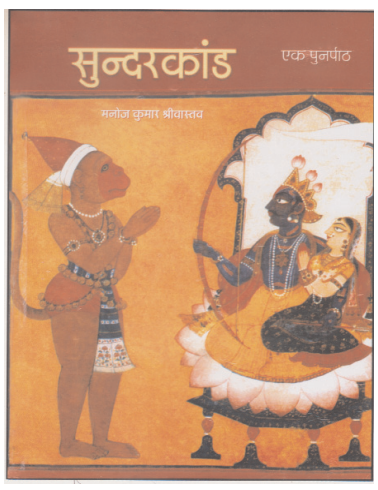

तुलसी की प्रणति जिस राम के प्रति है वे निष्पाप हैं। तुलसी की विशेषता यह है कि पाप चिन्ता उनकी प्राथमिकताओं और मूलों में नहीं है। शान्तं, शाश्वतं, अप्रमेयं ये विशेषताएं पहले आती हैं, अनघं का विचार उसके बाद वे पाप से आब्सेस्ड नहीं हैं। सर स्टुअर्ट विल्सन (1889-1966) ने कहा था कि इंग्लैंड का चर्च हमें यह समझने पर बाध्य करना चाहता है कि जन्म तो पाप में प्रवेश है, विवाह पाप का एक पक्ष और मृत्यु एक स्वागतयोग्य राहत कि अब हम और पाप नहीं कर सकते। आगस्टस टॉपलेडी ने इसी आधार पर मज़ाक किया था कि हर मानव तीस वर्ष की उम्र तक 6,30,720,000 पाप कर लेता है। तुलसी इतने पाप केन्द्रित नहीं हैं, वे अधिक प्रचलित पाप शब्द का इस्तेमाल न कर उसके एक पर्याय 'अघ' का इस्तेमाल करते हैं। अनघ शब्द का अर्थ निर्दोष, त्रुटिरहित, सुन्दर, खूबसूरत, सुरक्षित, विशुद्ध, कलंकरहित व जिसे चोट न लगी हो, होता है। अनघ से तुलसी का आशय निष्पाप से ही रहा हो, यह ज़रूरी नहीं। देखने की बात यह है कि हमारे यहां निर्दोषता और विशुद्धता में पापहीनता मानी गई। कुछ इसी तर्ज़ पर बच्चन ने कहा - 'पुण्य की है जिसको पहचान/उसे ही पापों का अनुमान/सदाचारों से जो अनभिज्ञ/दुराचारों से वो अनजान' लेकिन पश्चिम में ज्ञान के उदय के साथ मूल पाप का अहसास प्रबल होता है। हमारे यहां पाप अज्ञान है। वहां पाप ज्ञान ज्ञान हमारे यहां अघ मर्षण करता है, पापनाशी है। ज्ञान वहां पाप बोध कराता है, ज्ञानोपरांत पाप चेतना से ग्रस्त मनुष्य स्वर्ग से धकेल दिया जाता है। जिनेसिस में ईडन की जो एलीगरी है वह कहीं शायद यह भी बताती है कि ज्ञान के साथ आदमी में नैतिक चेतना (मॉरल सेंस) विकसित होती है। लेकिन नैतिक चेतना आध्यात्मिक चेतना नहीं है। वह द्वैतमूलक है, द्वन्द्वमूलक है।

आध्यात्मिक चेतना कदाचित् वह है जिसका इस ने अधि+आत्म ('ओवरसोल') के रूप में अर्थान्वयन किया है। वह द्वन्द्वात्मकता तो अविद्या है, ज्ञान इमर्सन द्विध्रुवीयता के पार है करम सुभासुभ तुम्हहि न बाधा। मांडूक्योपनिषद के अनुसार 'ज्ञाते द्वैतं न विद्यते' । ईडन में जो ज्ञान का फल चखा गया उसने खंड-चेतना दी। यही खंड चेतना हमारे यहाँ अज्ञान है। वहाँ ज्ञान पृथ्वी पर या सांसारिकता में ठेलता है। हमारे यहाँ कहा गया है कि 'न ज्ञानेन विना मोक्षो'। गीता कहती है - अज्ञानमलपूर्णत्वात्/पुराणो मलिनः स्मृतः/ तत्क्षयाद्वैभवेन्मुक्ति' अर्थात् अज्ञान रूपी मल से पूर्ण होने के कारण यह पुरातन जीव मलिन माना जाता है, उस मल का क्षय होने से ही इसकी मुक्ति हो सकती है। वहां संदेह और जिज्ञासा से ज्ञान मिलता है, हमारे यहां कहते हैं 'श्रद्धावान लभतेज्ञानम्।' एक व्याख्या यों हो सकती है कि पाप ईश्वर से मुकरना (डिपार्चर) है, इस अर्थ में ईडन की कथा भारतीय दर्शन के क़रीब मानी जा सकेगी। यह कि पाप ईश्वर से कटना (severence) है। मोक्ष शिवगीता के अनुसार 'अज्ञान हृदय नाशो मोक्ष इति स्मृति है, यानी हृदय की अज्ञान ग्रंथि का नष्ट होना ही मोक्ष कहा जाता है। तब पाप अनाध्यात्मिकता है। लेकिन दिक्कत तब आती है कि जब एक प्रथम पितर (फ़र्स्ट पैरेन्ट्स) के पाप को विरासत योग्य (इनहेरिटेबल) मान लिया जाता है। हमारे यहाँ पाप-पुण्य कर्म से फलित होते हैं। उनकी स्थांतरणीयता (ट्रांसफरेबिलिटी) का इतना व्यापक रूप कहीं नहीं कल्पित है कि आदम-हौवा के मूल पाप को बाद की सारी पीढ़ियाँ ढोती फिरें। वेदव्यास महाभारत के आदिपर्व में इतना अवश्य कहते हैं - पुत्रेषु वा नप्तृषु वा न चेदात्मनि पश्यति/फलत्येव ध्रुवं पापं गुरुभुक्तमिवोदरे।। कि जिस प्रकार गरिष्ठ भोजन पेट में जाकर अवश्य दुःख देता है उसी प्रकार पाप अपने लिए अनिष्टकर न प्रतीत होने पर भी बेटे-पोतों तक पहुँचकर अपना प्रभाव दिखाता है। लेकिन इतना ही। सभी मनुष्यों की सारी संतति के द्वारा ढोए जाने वाली विरासतन पापग्रस्तता भारत में कल्पित नहीं की गई।

शायर हिमायत अली रुख्सत हुए

कनाडा के शहर टोरंटो में हिमायत अली शायर दुनिया से रूखसत हो गए। एक ज़माना था जब वे हिंदुस्तान और पाकिस्तान की अदबी महिफिलों की जान हुआ करते थे। कोई भी बड़ा मुशायरा उनके बिना मुमकिन नहीं था। फिर उनके दिल में जाने क्या आया कि वे कनाडा में जा बसे। मिट्टी का कर्ज,तश्नगी का सफर और हारून की आवाज उनकी मशहूर किताबे हैं। वे 1926 में हैदराबाद दक्षिण (औरंगाबाद)में पैदा हुए थे। और निजामे शाही की बंदिशों ने शुरू से ही उन्हें इस बात का एहसास करवा दिया था कि आजाद फिजा क्या होती है। हिंदुस्तान आजाद हुआ तो वे एक नए वतन की तरफ खिंचे चले आए। वे शायर थे। नाटक भी लिखे। उनकी जिंदगी का एक बड़ा हिस्सा सिंध के अदबी और सांस्कृतिक शहर हैदराबाद में गुजरा। वे रेडियो पाकिस्तान, हैदराबाद से जुड़े रहे। सिंध यूनिवर्सिटी में पढ़ाते रहे। पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने उन्हें प्राइड ऑफ पाकिस्तान से नवाजा था

हिमायत अली ने अपनी तखलीकी जिंदगी की शुरूआत नज़्म से की थी। आज की नस्ल कोरिया के नाम को जानती ज़रूर है, लेकिन आम तौर पर यह नहीं जानती कि 50 के दशक में कोरियाई क़ौम किस जंग के जहन्नम में जली थी। हिमायत ने अपनी एक ग़जल 'बंगाल से कोरिया तक' में एक ऐसे नौजवान की कहानी लिखी है, जिसका सफर बंगाल से शुरू होता है, वो कोरिया की जंग के मैदान से गुजरता है। एक तरफ बंगाल जंग की गर्म बाजारी देखता है तो दूसरी तरफ बंगाल का अकाल देखता है जिसके भयानक मंजर शायर का सीना खुरने लगते है।

उन्होंने ग़जलें कहीं, फिल्में बनाई, फिल्मी गीत लिखे और जिंदगी गुजारने के लिए अलग-अलग अंदाज अपनाए। ये बात बहुत उदास करती है कि उनकी जिंदगी में अपना वतन छोड़ने का सिलसिला बड़ा लंबा रहा। वे हैदराबाद दक्षिण से निकले थे और फिर आधी जिंदगी पाकिस्तान में गुजार कर कनाडा का रूख किया। हिमायत अली शायर के बेटे बुलंद इकबाल और उनके शायर व अदीब दोस्तों ने उन्हें टोरंटो की ज़मीन के सुपुर्द कर दिया।

रूमानी भावना से राष्ट्रीयता की ओर उन्मुख

-सौरभ भारद्वाज

सुमन जयन्ती /नागपंचमी

डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन कई दशकों तक हिन्दी काव्य जगत के सर्वाधिक चर्चित एवं लोकप्रिय कवि रहे। कविता और भाषा की जब भी बात की जाएगी डॉ. सुमन की रचनाओं को अवश्य ही तलाशा जाएगा। डॉ. सुमन की काव्य यात्रा के आधार सौन्दर्य, संघर्ष, संदेश व आस्था हैं। परम्परा व इतिहास, दोनों ही उनकी कविता में हैं। डॉ. सुमन के भीतर का जो शिवत्व था, उसकी आध्यत्मिक भूमि से वह सदा जुड़े रहे। उन्होंने मानवीय मूल्यों को उपदेश की तरह नहीं, स्वभाव की तरह जीया।

उनकी कविताओं में कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जो संदेशात्मकता की प्रचुरता लिये हुए है। प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र के नाम अपने सम्बोधन में अपने गुरू डॉ. सुमने को सम्मानपूर्वक याद करते हुए उनकी प्रेरणास्पद पंक्तियां उद्धृत की थीं- 'क्या हार में क्या जीत में, किंचित नही भय-भीत मैं, संघर्ष पथ पर जो मिले, यह भी सही वह भी सही/'

काव्य संग्रह 'पर आँखे नहीं भरीं ' में डॉ. समने कहते हैं- 'निर्मम कुम्हार की थापी से , कितने रूपों में कुटी-पिटी/ हर बार बिखेरी गई, किन्तु मिट्टी फिर भी तो नहीं मिटी/'

युवा पीढ़ी काआव्हान करते हुए डॉ. सुमन कहते हैं- 'मिट्टी के पुतले मानव ने, कभी न मानी हार/तूफानों की ओर घुमा दो, नाविक! निज पतवार/'

नई चेतना उत्पन्न करने का संदेश देत हुए काव्य संग्रह 'प्रलय सृजन ' में सुमन जी ने कहा है-'मुर्दों में प्राण फूंकने को, मेरी वाणी विह्वल आतुर'। स्वतंत्रा संग्रम के समय प्रकाशित काव्य संग्रह 'जीवन के गान में' कवि स्वतंत्रता संग्राम के लिये प्रेरित करते हुए कहते हैं- 'कुछ मस्तक कम पड़ते होगें, जब महाकाल की माला में/ पलभर भी असमंजस में पथ भूल न जाना पथिक।' कवि ने 'विश्वास बढ़ता ही गया' कहा है- 'मेरा देश जल रहा है कोई नहीं बुझाने वाला','आज देश की मिट्टी बोल उठी' और 'नई आग है नई आग है।'

डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन के साथ सौरभ भारद्वाज और डॉ. पुष्पा चौरसिया

डॉ.सुमन के काव्य में संघर्ष, स्वतंत्रता और प्रगति के संदेश प्रसारित हुए हैं। डॉ. सुमन ने 'स्व' की खोज ही नहीं की उसका निरन्तर विस्तार भी किया। उनके 'विंध्य हिमालय' काव्य संग्रह की यह पंक्तियां खुद से संवाद का जागता उदाहरण हैं- 'मैं शिप्रा सा तरल सरल बहता हूं/ मैं कालिदास की शेष कथा कहता हूं/ मुझको न मौत भी भय दिखला सकती/ मैं महाकाल की नगरी में रहता हूँ/ काव्य संग्रह ' पर आखें नहीं भरीं' में वे कहते हैं- ' मैं चलता जा रहा, राह के दृश्य बदलते जाते है।' इस तरह जो संवाद उन्होंने स्वंय से किए वह औरों के लिए भी प्रेरणा स्रोत हैं'।

डॉ. सुमन ने स्वंय अपनी कृतियों के संबंध में समीक्षात्मक वक्तव्य दिया है जो भाव बोध, वैचारिक प्रतिबध्दता व अपनी रचनाओं का सच स्वीकार करने का साहस दर्शाता है। अपनी रचनाधर्मिता की विवशताओं का सच स्वीकार करने में उन्होने कोई परहेज नहीं किया। डॉ. सुमन ने एक जगह अपने वक्तव्य में कहा है-'हिल्लोल' में मेरे उन्मत्त मन की राग- भावना, उत्कंठा और व्यग्रता प्रकट हुई है। किन्तु यह सच है कि वे रूमानी अभिव्यक्तियाँ मेरे आत्मानुभव की परिणति नही हैं। या तो छायावादी फैशन के रूप में लिखी गई या केवल कल्पना अथवा भाव तंरग की व्यंजना के रूप में। इसी प्रकार 'प्रलय सृजन' काल में मैं विश्लेषण के दौर से गुजर रहा था। आवेश के कारण कलापक्ष की उपेक्षा होना स्वभाविक है। मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है। कि 'प्रलय सृजन' में मुझे पर बाह्य परिवेश का प्रभाव अधिक था, अंतर्दर्शन की प्रवृत्ति कम।'

डॉ. सुमन रूमानी संस्कारों के कवि रहे। उनके काव्य की मूल प्रेरणा ही प्रेम थी। डॉ.सुमन ने स्वंय स्वीकार किया है कि मेरी रूमानी प्रवृत्ति राष्ट्रीय चेतना से गुंथ गई है।

जयशंकरप्रसाद की तरह डॉ.सुमन प्रेम की सहवर्ती यात्राएँ करते हैं। डॉ. सुमन की कविता 'मेरा पथ मत रोको रानी ' उनकी रूमानी भावना से राष्ट्रीय भावना की ओर उन्मुख होने का संकेत करती है। चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह जैसे महान क्रांतिकारियों के प्रभाव के कारण रूमानी विह्वलता का परिवर्तन एक स्वाभाविक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया थी। 'हिल्लोल' से प्रारंभ होकर 'कटे अंगूठों की बन्दनवारें' तक उनकी सम्पूर्ण काव्ययात्रा पर यदि हम दृष्टिपात करें तो यह जान पाते हैं कि डॉ. सुमन ने विभिन्न विधाओं में अपनी छाप छोड़ी है, जो इतिहास में अपने पद चिन्ह अंकित कर चुकी है। उनके साहित्य में मूलतः रोमानी चेतना है, जो क्रमशः प्रगतिवादी, राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय मानवतावाद के धरातलों पर परिलक्षित हुई है। जो साहित्य की हर एक विधा के रस का प्रतिनिधित्व करती है। सुमन जी की वाणी में कालिदास, कबीर , तुलसी, टैगोर, निराला, प्रसाद माहदेवी आदि के साहित्य की अनुगूंज सुनी जा सकती है। मानों यह सभी डॉ. सुमन के व्यक्तित्व, वाणी व साहित्य में समाहित हैं।

भू जल दूषित होने के मामले में म.प्र सहित 4 राज्यों की स्थिति चिंताजनक

जलशोधन इंतजामों के अभाव में नदियों में घुल रहा जहर

नई दिल्ली। जलशोधन के पर्याप्त इंतजामों के अभाव में देश में न केवल नदियों, तालाबों और जलाशयों का पानी जहर बनता जा रहा है बल्कि खेती में रासायनिक खादों के अत्यधिक इस्तेमाल के कारण भूजल भी दूषित हो रहा है। भूजल दूषित होने के मामले में मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और ओड़ीशा में चिंताजनक स्थिति है। नदियों में दूषित जल के प्रवाह और आर्सेनिक व केडमियम जैसी भारी धातुओं के मिलने से भूजल के दूषित होने के बारे में पर्यावरण, वन व जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा संसद में पेश आंकड़ों से यह बात उजागर हुई है। मंत्रालय ने रिपोर्ट में बताया कि केंद्रीय भूजल बोर्ड ने विभिन्न राज्यों में फ्लोराइड, आर्सेनिक, नाइट्रेट और आयरन सहित अन्य भारी धातुओं की भूजल में निर्धारित मानकों से अधिक मात्रा पाए जाने की पुष्टि की है। बोर्ड ने रिपोर्ट में कहा कि भू जल में निर्धारित मानक से अधिक मात्रा में नाइट्रेट के मिले होने की वजह अत्यधिक रासायनिक खाद का इस्तेमाल हो सकता है। मंत्रालय ने बताया कि सीवर के जलशोधन की जरूरत के लिहाज से महज 37 फीसद क्षमता के कारण नदियों का पानी दूषित हो रहा है। मंत्रालय ने इस स्थिति में सुधार के लिए राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना के तहत सीवर के कारण दूषित जल की समस्या से सर्वाधिक प्रभावित 16 राज्यों की 34 नदियों को जलशोधन के द्वारा 2522 मिलियन लीटर प्रतिदिन (एमएलडी) सीवर की मिलावट से निजात दिलाई है। हालांकि सरकार ने स्वीकार किया कि शहरी क्षेत्रों में प्रतिदिन 61,948 एमएलडी सीवर का अनुमानित निष्पादन है और इसमें से 23,277 एमएलडी का ही देश भर में मौजूद 816 जलशोधन संयत्रों (एसटीपी) से शोधन हो पाता है। सीवर के जलशोधन संबंधी केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के राज्यवार आंकड़ों के मुताबिक उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और तमिलनाडु, सीवर जल की कम शोधन की समस्या से सबसे ज्यादा प्रभावित हैं।

महाराष्ट्र में प्रतिदिन निकलने वाले 8143 एमएलडी सीवर में 76 एसटीपी की मदद से 5160.36 एमएलडी का शोधन हो पाता है। उत्तर प्रदेश में प्रतिदिन 7124 एमएलडी सीवर में से 73 एसटीपी से 2646.84 एमएलडी और तमिलनाडु में प्रतिदिन 5599 एमएलडी सीवर में से 73 एसटीपी से 1799.72 एमएलडी का शोधन होता है। सीवर के शोधन की क्षमता के मामले में पंजाब अव्वल है। राज्य में 86 एसटीपी की मदद से प्रतिदिन 1664 77 एमएलडी सीवर में से 1245 एमएलडी (लगभग 75 प्रतिशत) का शोधन होता है। भूजल दूषित होने के मामले में मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और ओड़ीशा में चिंताजनक स्थिति है। केंद्रीय भूजल बोर्ड की रिपोर्ट के आधार पर मंत्रालय द्वारा संसद में पेश आंकड़ों के मुताबिक मध्य प्रदेश के 43 जिले फ्लोराइड, 51 जिले नाइट्रेट और 41 जिले लोह तत्व (आयरन) की भूजल में अधिकता से प्रभावित हैं। इसके अलावा राजस्थान के 33 जिलों का भूजल फ्लोराइड, नाइट्रेट और आयरन की अधिकता के कारण स्वास्थ्य मानकों के मुताबिक दूषित है। उत्तर प्रदेश में इन तत्वों की अधिकता के कारण भूजल के दूषित होने से प्रभावित जिलों की संख्या 28 से 59 और ओड़ीशा में 26 से 30 हो गई है। राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाए तो देश के 423 जिले भू जल में नाइट्रेट की अधिकता से प्रभावित हैं, जबकि 370 जिले फ्लोराइड और 341 जिले आयरन की अधिकता से प्रभावित हैं।

2019 के बुकर पुरस्कार की सूची में रश्दी और मार्गरेट ऐटवुड भी

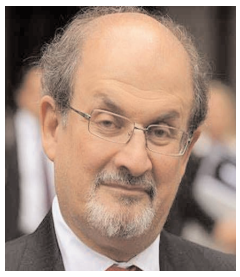

लंदन। ब्रिटिश-भारतीय उपन्यासकार सलमान रश्दी के आगामी दिनों में प्रकाशित होने वाले उपन्यास 'क्विचोटे' ने इस साल के बुकर पुरस्कार की लंबी सूची में जगह बनाई है। 72 वर्षीय लेखक को पूर्व में 1981 में 'मिडनाइट्स चिल्ड्रन' के लिए यह प्रतिष्ठित पुरस्कार मिला था। वर्ष 2000 में 'ब्लाइंड असैसिन्स' के लिए बुकर पुरस्कार जीत चुकीं कनाडाई लेखिका मार्गरेट ऐटवुड का नाम भी इस साल के बुकर पुरस्कार की सूची में शामिल है। उनका नाम उनके उपन्यास 'द टेस्टामेंट्स' के लिए शामिल किया गया है, जो उनकी चर्चित किताब 'द हैंडमेड्स टेल' की उत्तर कथा (सीक्वल) है।

पांच सदस्यीय चयन समिति ने घोषणा की है कि इस बार की लंबी सूची एक अक्टूबर, 2018 से 30 सितंबर 2019 के बीच ब्रिटेन या आयरलैंड में प्रकाशित 151 उपन्यासों के अध्ययन के बाद तैयार की गई है। इस बार की लंबी सूची में केविन बैरी का 'नाइट बोट टू तांजियर', ओयिकान ब्रैथवेट का 'माई सिस्टर, द सीरियल किलर', लकी एल्मैन का 'डक्स न्यूबुरीपोर्ट', बेर्नार्डाइन एवरिस्टो का 'द वाल', देबोराह लेवी का 'द मैन हू सॉ एवरीथिंग', वैलेरिया लुइसली का 'लॉस्ट चिल्ड्रन आर्काइव', चिगोजी ओबियामा का 'एन ऑर्केस्ट्रा ऑफ माइनोरिटीज', मैक्स पोर्टर का 'लैनी', एलिफ शफाक का '10 मिनट 38 सेकंडस इन दिस स्ट्रेंज वर्ल्ड' और जीनेट विटरसन का 'फ्रैकिस्टीन' उपन्यास शामिल हैं।

भारतीय सेना का मानवीय चेहरा

प्रोटोकॉल तोड़कर पेश की इंसानियत की मिसाल

नई दिल्ली। भारतीय सेना ने प्रोटोकॉल तोड़कर इंसानियत की मिसाल पेश की है। गुरुवार को कश्मीर के बांदीपुरा में सेना ने आठ साल के एक पाकिस्तानी बच्चे का शव उसके परिजनों को सौंप दिया। शव गुरेज के गांव में किशनगंगा नदी से निकाला था। बच्चे की पहचान आबिद शेख के रूप में हुई। भारतीय सेना ने नियंत्रण रेखा पर स्थानीय लोगों की मदद से गिलगित के रहने वाले इस बच्चे का शव पाकिस्तानी अधिकारियों की मौजूदगी में उसके परिजनों को सौंप दिया। बच्चे के शव को पहले प्रोटोकॉल के मुताबिक नियंत्रण रेखा के पास अचौरा गुरेज क्षेत्र से भेजने की तैयारी थी। लेकिन पाकिस्तानी सेना ने बताया कि यह उनका क्षेत्र है और उस रास्ते से शव ले जाने की इजाजत नहीं दी गई। बाद में सेना ने टंडवाल कुपवाड़ा रोड से होते हुए बच्चे के परिवार को शव सौंपा दिया।

एवरेस्ट को बाजारीकरण से बचाना जरूरी- जॉन पोर्टर

मुंबई। आल्प्स पर्वत की चढ़ाई करने वाले जॉन पोर्टर ने कहा है कि पर्वतारोहण को एवरेस्ट पर हो रहे व्यावसायिक सर्कस से अलग करने की जरूरत है, जहां व्यक्तिगत प्रसिद्धि पाने की चाह में भारी संख्या में लोग पहुंच रहे हैं, जिससे वहां जाम जैसी स्थिति पैदा हो गई। ब्रिटेन में आल्पाइन क्लब के अध्यक्ष पोर्टर, लोगों के पर्वतों के प्रति जुनून के खिलाफ नहीं हैं। यह दुनिया में पर्वतारोहण का सबसे पुराना क्लब है। उन्होंने यहां एक साक्षात्कार में कहा, पर्वतारोहण को अब एवरेस्ट पर जो कुछ भी होता है उस रूप में देखा जाता है और एवरेस्ट वाणिज्यिक सर्कस बन गया है। लोग सोचते हैं कि वे पर्वत की चोटी पर जाने की टिकट खरीद सकते हैं। पोर्टर ने कहा कि आपको एडवेंचर पर्यटन और पर्वतारोहण के बीच फर्क करने की जरूरत है। कुछ अन्य लोगों के साथ आल्प्स पर्वत की चढ़ाई करके ख्याति पाने वाले पोर्टर 18वें गिरिमित्र सम्मेलन में भाग लेने के लिए मुम्बई आए थे। पोर्टर ने यह भी सलाह दी कि अगर कुछ गलत होता है तो पर्वतारोही के पास बुद्धि और तत्परता होनी चाहिए।

खातेगावं के नीरज के 'लोगो' को मिला पहला स्थान

खातेगांव (देवास)। जल शक्ति मंत्रालय द्वारा जल संरक्षण के लिए राष्ट्रीय स्तर पर लोगो (मानक प्रतीक चिन्ह) डिजाइन के लिए प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इसमें खातेगांव के नीरज सैनी ने 3600 प्रतिभागियों को पछाड़ते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। जलशक्ति मंत्रालय के कैबिनेट सेक्रेटी उपेंद्रप्रसाद सिंह व इंटरनेशनल वाटर मैनेजमेंट इंस्टिट्यूट, कोलंबो के वैज्ञानिक पीयूष शाह ने नीरज को 51 हजार रूपए का चेक एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

फादर ऑफ ट्री ने 4 राज्यों में 20साल में लगाए 4लाख पौधे

अमृतसर। पंजाब में तरन्तारन के बाबा सेवा सिंह 20साल में चार राज्यों में 4लाख से ज्यादा पौधे लगा चुके हैं। इनमें से ज्यादातर पौधे लगा चुके हैं। इनमें से ज्यादातर पौधे पेड़ बन चुके है। इस कारण लोग उन्हें फादर ऑफ ट्री के नाम से बुलाते हैं। वे बतातें हैं- पौधे लगाना मुशिकल नहीं है। असली मेहनत उसे बड़ा करने में है। इसी सोच के साथ उन्होंने तरनतारन के खडूर साहिब में चार एकड़ में नर्सरी बना रखी है। जहां हर समय एक लाख से अधिक पौधे तैयार रहते हैं। वर्तमान समय में वे ब्यास -अमृतसर हाईवे के किनारे भी पेड़ लगाने की सेवा कर रहे हैं। पर्यावरण के प्रति उनके प्रेम को देखते हुए 2010में उन्हें पद्म्श्री दिया गया था। सेवा सिंह ने बताया कि वे पिछले 20 साल में पंजाब,राजस्थान, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के 450 कि.मी. इलाके में पौधे लगा चुके है। लोग बताते हैं कि बाबा सेवा सिंह कभी किसी को लगाने के लिए पौधे नहीं देते। वह पहले पूछते हैं कि किस जगह और कितने पौधे लगाते हैं। इसके बाद खुद वहां जाकर पौधे लगाते हैं।

तबला कार्यशाला का समापन

उज्जैन।संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से गोथरवाल शिक्षण समिति द्वारा 21जुलाई को 'तबले का प्रारंभिक सहज एवं सरल ज्ञान' विषय पर निःशुल्क कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला प्रशिक्षक रामचन्द्र चौहान (नागदा) थे।

कार्यशाला का समापन समारोह पं.सतीश जोशी के आतिथ्य एवं पं.राजेन्द्र आर्य की अध्यक्षता में हुआ। प्रशिक्षक रामचंद्र चौहान एवं प्रशिक्षर्थियों ने तबला वादन किया। चौहान ने पेशकार,उठान,कायदे आदि का वादन किया। हारमोनियम संगत सतीश गोथरवाल ने की। कार्यक्रम में आरोही और अन्तरा आठवले ने युगल कथक नृत्य प्रस्तुत किया। डॉ. अवधेशपुरी महाराज एवं अतिथियों द्वारा कार्यशाला के प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गए। कार्यक्रम का संचालन तृप्ति गोथरवाल ने किया एवं आभार सचिव विजय गोथरवाल ने व्यक्त किया।

कजली से बने चित्रों की प्रदर्शनी

उज्जैन। कालिदास अकादमी में प्रयास संगीत चित्रकला संस्थान की ओर से लगाई गई दो दिनी चित्र प्रदर्शनी में चित्रकार अनिल जोशी द्वारा प्रशिक्षित हर्षिता खत्री (24वर्ष),तनिष्का सोनी (16वर्ष) योगेश्वरी लोधा(22वर्ष) एवं रिद्धिश्री सावंत(12वर्ष)द्वारा तैयार 60 चित्रों को कजली पेंटिंग से तैयार चित्रों को प्रस्तुत किया गया । चित्रकार जोशी ने बताया कि कजली पेंटिंग में दीये से निकले कॉर्बन द्वारा चित्र तैयार किए जाते हैं। इसमें ब्रश का इस्तेमाल नहीं होता है।

प्रदर्शनी में सौंदर्य ,प्रकृति, बचपन और ममता पर आधारित विषयों के अलावा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, डॉ. भीमराव अंबेडकर एव एसपी सचिन अतुलकर के चित्र थे।

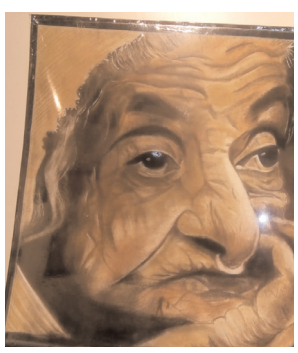

शोध का उदेश्य मानव कल्याण

उज्जैन। मनोविकास कॉलेज ऑफ स्पेशल एजुकेशन द्वारा निर्मला कॉलेज के सहयोग से शोध प्रवधि, सांख्यिकी व एसपीएसएस के उपयोग पर केंद्रित 7 दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाल के समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अध्यापन मंडल के पूर्व अध्यक्ष डॉ जेएस ग्रेवाल, विशेष अतिथि और शिक्षा महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ अरूण प्रकाश पाण्डे भोज मुक्त विश्वविद्यालय के डॉ आर.एस .पाण्डेय थे। अध्यक्षता उज्जैन के विशप डॉ. सेबास्टियन वडक्केल ने की। डॉ. ग्रेवाल ने विशेष शिक्षा एवं अनुसंधान पर व्याख्यान देते हुए बताया कि शोध में मीडिया रिपोर्ट की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण होती है और अवलोकन पद्धति को अत्यंत उपयोगी माना गया है। डॉ अरूण प्रकाश पाण्डेय ने बताया कि शोध का एक मात्र उेदश्य मानव कल्याण होना चाहिए। म.प्र. विकलांग सहायता समिति के संचालक फादर जॉर्ज ने बताया कि इस कार्यशाला में देशभर के विभिन्न राज्यों से आए 62 प्रतिभागियों ने डॉ. डी.एन. सनसनवाल के मार्गदर्शन का लाभ लिया। कार्यक्रम में प्रतिभागी डॉ रश्मि पंड्या व डॉ. मीनाक्षी पाराशर ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। संचालन चेतन भारद्वाज ने किया। आभार डॉ. प्रेम छाबड़ा ने माना।

डॉ.धनंजय वर्मा की बहुचर्चित पुस्तक का 46 वर्षों बाद पुनर्प्रकाशन

- अशोक वक़्त

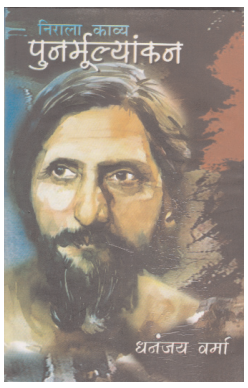

वरेण्य आलोचक और सागर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ.धनंजय वर्मा की बहुचर्चित पुस्तक निराला काव्य-पुनर्मूल्यांकन' का हाल ही में पुर्नप्रकाशन हुआ है। करीब 25 महत्वपूर्ण पुस्तकों के लेखक डॉ. धनंजय वर्मा की यह पहली किताब है, जिसका प्रथम प्रकाशन सन् 1960 में 'निराला-काव्य और व्यक्तिव' शीर्षक से हुआ था, जिसकी भूमिका आचार्य नन्दुलारे वाजपेयी ने लिखी थी। पांच साल बाद (1965 में) पुस्तक का दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ था और 1973 में तीसरा। समय के साथ यह पुस्तक अप्राप्य होती चली गई लेकिन उसकी मांग लगातार बनी रही। अब करीब 46 वर्ष बाद इस किताब के तीसरे संस्करण का प्रकाशन हुआ है।

पुस्तक में पांच खण्ड के अर्न्तगत 14 लेख हैं। 'परिभूमि शीर्षक' प्रथम खण्ड में 3 लेख हैं- 1 निराला और स्वच्छन्दतावादी समीक्षा 2 निराला और प्रगतिवादी समीक्षा और 3 निराला और परवर्ती समीक्षा। 'संदर्भ' शीर्षक दूसरे खण्ड में 4 लेख हैं- मुक्तकाव्य-परिमल, संगीत काव्य-गीतिका, महाकाव्यात्मक औदात्य और परवर्त्ती काव्य। 'मूल्यांकन' शीर्षक चौथे खण्ड में तीन लेख हैं- रूप बंध, उपलब्धि और एक अभिभाषण। 'भरतवाक्य' शीर्षक पांचवें खंड में एक ही लेख है- समावेशी आधुनिकता के कवि-निराला।

पुस्तक का पुरोवाक डॉ. धनंजय वर्मा की लेखिका और विदुषी पुत्री डॉ. निवेदिता वर्मा ने लिखा है। पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रसिद्ध लेखक-चित्रकार प्रभु जोशी द्वारा निर्मित निराला का आकर्षक और प्रभावी चित्र है। पुस्तक भोपाल के पहले पहल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गई है।

निराला -काव्य के वैविध्य की छानबीन और उसके समन्वित आकलन का प्रयास

-आचार्य नंददुलारे वाजपेयी

निराला के साहित्य और उनके व्यक्तित्व से सम्बन्धित कई पुस्तकें अब तक प्रकाशित हुई हैं। वे सभी विवेच्य विषय पर अपनी-अपनी दृष्टि से प्रकाश डालती हैं परन्तु किसी एक पुस्तक में निराला के व्यक्तित्व, उनकी विचारणा और उनके काव्य का समाहित स्वरूप उपस्थित नहीं हुआ। प्रस्तुत पुस्तक में श्री धनंजय वर्मा ने इनका एक समाहित चित्र देने का प्रयत्न किया है। व्यक्तित्व और जीवनी वाले अध्यायों के परिपार्श्व में निराला जी के काव्य की समीक्षा की गई है। इस कारण सम्पूर्ण पुस्तक में एक अन्विति और समरसता आ सकी है, जो लेखक की उल्लेखनीय उपलब्धि है। निराला-काव्य का विवेचन आनुक्रमिक भूमिका पर किया गया है, जिससे उनकी काव्य-रचना के क्रम विकास का यथोचित परिचय मिल जाता है। निराला जी के व्यक्तित्व के अनेक पहलु उनके काव्य में प्रतिच्छायित हुए हैं, परन्तु सूक्ष्मता के साथ और गहराई में जाकर उस प्रतिच्छाया का निर्देश अब तक पर्याप्त रूप में नहीं किया गया है। धनंजय जी ने इस दिशा में भी प्रयास किया है। प्रायःलोग निराला के काव्य को अतिरंजना की दृष्टि से देखते हैं। कुछ समीक्षकों को उनमें सहृदयता की कमी दिखाई दी है। बौद्धिक पक्ष का प्राबल्य जान पड़ा है। कुछ अन्यों को उनकी काव्य-रचना में कोई दोष दिखाई नहीं दिया। इन सबमें संतुलित दृष्टि की कमी रहती है। श्री धनंजय वर्मा ने यहां एक संतुलन लाने की चेष्टा की है।

निराला जी के अद्यतन काव्य में कुछ नये तत्व पाए जाते हैं जिनकी विवेचना हाल के समीक्षकों ने बहुत ही एकांगी दृष्टि से की है। निराला जी का काव्य-विकास 'परिमल-गीतिका' तक एक विशेष दिशा का निदर्शक है। उनकी 'राम की शक्ति-पूजा' और 'तुलसीदास' आदि वृहत्तर काव्य-रचनाएं एक-दूसरे उत्थान की प्रतिनिधि हैं। 'कुकुरमुत्ता' से लेकर 'बेला' और 'नये पत्ते' तक निराला जी का काव्य व्यंग्य, हास्य और प्रयोग की धाराओं में प्रभावित हुआ है। उनका अन्तिम काव्य निर्माण शान्त रस की भूमिका पर चला है। भाषा के प्रयोग में भी अनेक परिवर्तन निराला जी ने किए हैं, यद्यपि उनकी एक श्रृंखला भी बनी हुई है। इन समस्त भिन्नताओं के रहते हुए निराला का काव्य वैशिष्ट्य किसी सूक्ष्मदर्शी समीक्षक द्वारा ही आकलित हो सकता है। प्रायः लोग उनकी सम्पूर्ण रचनाओं का तारतम्य नहीं जान पाते। विविधता में एकता की पहचान नहीं हो पाती। श्री धनंजय वर्मा ने निराला-काव्य के वैविध्य की छानबीन की है, और उसके समन्वित आकलन का प्रयत्न भी किया है।

संक्षेप में इस पुस्तक में निराला के काव्य-वैशिष्ट्य को केन्द्र में रखकर उनकी विविध कृतियों की समीक्षा की गई है। पृष्ठभूमि में निराला की जीवनी बराबर बनी रही है। इस कारण इस समीक्षा-पुस्तक में वस्तुमुखी साहित्यिक विवेचन के लिए अधिक अवकाश मिल सका है। पुस्तक में अब तक की समीक्षाओं का उपयोग करते हुए नये संतुलन और समाहार का उपयोग किया गया है। यही इस पुस्तक की प्रमुख विशेषता है।

(आचार्य वाजपेयी द्वारा 26फरवरी 1960 को लिखा गया, डॉ. धनंजय वर्मा की पहली पुस्तक का प्राक्कथन)

समग्रता और संतुलन की कोशिश

-धनंजय वर्मा

मेरी पहली पुस्तक 'निरालाः काव्य और व्यक्तित्व', सन् 1960 में प्रकाशित हुई थी । कवि निराला और उनके काव्य पर लिखे गए मेर प्रबन्ध का वह किंचित परिवर्तित रूप थी। निराला काव्य के प्रेमियों, अध्येताओं और विद्वानों में उसका जैसा स्वागत और सम्मान हुआ, वह मेरे लिए सुख और सन्तोष का विषय था । सन् 1965 में उसका दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ, जिसमें मैं चाहकर भी कोई संशोधन और परिवर्तन नहीं कर पाया। एक अर्से से उसका वह संस्करण भी समाप्त हो गया है, लेकिन उसकी मांग बराबर बनी हुई है।

जब उसके पुनर्प्रकाशन की बात उठी तो मैंने उसे आद्यन्त संशोधित कर दिया और उसका लगभग पुनर्लेखन ही हो गया। निराला के काव्य के आस्वादनऔर मूल्यांकन की पृष्ठभूमि स्वरूप नये अध्याय संयुक्त कर दिये गये और सम्पूर्ण पुस्तक एक नये रूप में प्रस्तुत की जा रही है।

''यदि सामयिक हिन्दी में कोई ऐसा विषय है जो अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक क्लिष्ट और दुरूह समझा जा सके, तो वह श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का विकास है। इस कवि के व्यक्तित्व के काव्य के निर्माण में ऐसे परमाणुओं का सन्निवेश हुआ है जिनका विश्लेषण हिन्दी की वर्तमान धारणाभूमि में विशेष कठिन क्रिया है। हिन्दी भाषी जनता के साहित्यिक ज्योतिषियों ने, कहानीवाले सात अन्धे भाइयों की भाँति, भाँति-भाँति से, हाथी की हास्य-विस्मयभरी रूप रेखाएं बखान कीं, जिनसे 'निराला' जी की अपेक्षा समीक्षकों की निराली सामुद्रिक बुद्धि का ही परिचय मिला...।'

यह बात आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने सन् 1933 में लिखी थी, लेकिन आज 40-42 वर्षों बाद भी स्थिति में कोई खास परिवर्तन नहीं आया है। निराला के काव्य और साहित्य पर तब से अब तक काफी कुछ लिखा जा चुका है, कई विश्वविद्यालयों में उन पर अनुसंधान भी हो चुका है और हो रहा है। यह सब उनके काव्य के समग्र बोध और आकलन की दिशा में कितना सार्थक और महत्वपूर्ण है, इसकी विवेचना यहां अप्रासंगिक होगी, उस पर अलग से विचार किया गया है। उनके काव्य-विकास को समझने के लिए जिस सतर्क जागरूकता, पूर्वापर सम्बन्धों की चेतना और अनुक्रमिक भूमिका की जरूरत है, मैं उसी के प्रति सचेत रहा हूँ और मैंने कोशिश की है कि उनके काव्य के एकीकृत और समन्वित रूप प्रस्तुत कर सकूं। इसीलिए मैंने प्राप्त और प्रचलित समीक्षा की सीमाओं से बचकर निराला-काव्य का, उसके पूरे परिवेश में, विश्लेषण और पुनर्मूल्यांकन किया है।

यह निराला के काव्य का आधिकारिक और आत्यन्तिक मूल्यांकन है, ऐसा मेरा दावा नहीं है, मगर समग्रता और संतुलन की कोशिश भरी बराबर रही है।

(डॉ.धनंजय वर्मा द्वारा निराला जन्मदिवस बसन्त पंचमी 1973 को लिखा गया अपनी पुस्तक 'निराला -काव्य और व्यक्तित्व' के तीसरे संस्करण का आत्मकथ्य)

'निराला वाले धनंजय वर्मा'

-निवेदिता वर्मा

डॉ. धनंजय वर्मा की पहली पुस्तक 'निरालाः काव्य और व्यक्तित्व' सन् 1960 में प्रकाशित हुई थी। इसकी 'विवृति' के अंत में तिथि का उल्लेख है- चैत्र शुक्ल 12 सोमवार संवत 2016, दिनांक 20 अप्रैल 1959। यही उनकी एम.ए. की थीसिस (लघुशोध प्रबन्ध) के प्रस्तुत होने की तिथि है। जब वे अपनी थीसिस की प्रतियाँ, परीक्षार्थ अग्रेषित करवाने, अपने गुरू आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के निवास पर पहुँचे, तब आचार्य श्री के छोटे भाई श्री रामदुलारे वाजपेयी भी वहाँ बैठे थे। उन्होंने थीसिस की एक प्रति उलट-पलट कर देखी और कहा-''भैया, मैं इसे छपवा देता हूं'' । आचार्य श्री ने कहा- ''प्रबन्ध अभी प्रस्तुत हुआ है। इसका परीक्षण-मूल्यांकन होना है और तुम इसके प्रकाशन की बात कर रहे हो''? श्री रामदुलारे वाजपेयी ने कहा- ''वह सब आप करते रहना। मैं आपकी निजी प्रति ले जाता हूं।'' आचार्य श्री ने धनंजय वर्मा की और देखा। वे भौंचक। ''मैं क्या कहूं। आप जैसा उचित समझें''-उन्होंने कहा।

जुलाई 1960 में धनंजय वर्मा छत्तीसगढ़ कॉलेज, रायपुर में हिन्दी के व्याख्याता नियुक्त हो गये। एक दिन सुखद आश्चर्य की तरह उन्हें 'निरालाः काव्य और व्यक्तिव' की प्रतियाँ मिलीं। उनका आश्चर्य और सुख दोबाला हो गए यह देखकर कि आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने उसका प्राक्कथन लिखा है और तिथि है 26 फरवरी 1960। पुस्तक हिन्दी परिषद, सागर विश्वविद्यालय के तत्वावधान में विद्या प्रकाशन मंदिर, दरियागंज, दिल्ली से प्रकाशित हुई थी।

इसके 'प्रकाशकीय' में प्रकाशक श्री अमरनाथ शुक्ला (जो स्वयं भी लेखक थे) ने लिखा हैः '' प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशित करते हुए हम गर्व का अनुभव कर रहे हैं। युग-सृष्टा महाकवि निराला पर पहले भी लिखा गया है पर इस पुस्तक में महाकवि के जीवन तथा कृतियों का जो विशद और प्रामाणिक मूल्यांकन हुआ है, वह लेखक के गहन अध्ययन तथा प्रतिभा का परिणाम है तिस पर निराला जी के निकटतम जानकार प्रसिद्ध विद्वान आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी के निरीक्षण और निर्देशन ने इसकी प्रामाणिकता में सोने में सुहागा का काम किया है। प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन की प्रेरणा मे श्री रामदुलारे वाजपेयी का बड़ा हाथ रहा है। आभार शब्दों से अधिक आत्मानुभूत करता हूं।''

एक नये लेखक की पहली पुस्तक वह भी आलोचना की, उसका स्वागत भी खूब हुआ। प्रोफेसर अक्षय कुमार जैन के शब्दों में ''उस समय महाप्राण निराला पर कोई प्रमाणिक शोध ग्रंथ नहीं आाय था। पहले प्रकाशन के बाद ही वे (धनंजय वर्मा) स्तरीय आलोचक मान लिए गए।'' सागर विश्वविद्यालय में धनंजय वर्मा के समकालीन (प्रख्यात आलोचक) डॉ. शिवकुमार मिश्र उन्हें याद करते हैं ''एम.ए.पास धनंजय वर्मा उस पुस्तक के नाते डॉ. धनंजय वर्मा के रूप में चर्चित होने लगे। ऐसा था (है) उनका लघुशोध प्रबन्ध।'' दरअसल 1961-62 में 'आलोचना' (त्रैमासिक) में डॉ. इन्द्रनाथ मदान का निराला पर एक लेख प्रकाशित हुआ। उसमें उन्होंने 'निरालाः काव्य और व्यक्तिव' के कुछ उद्धरण देते हुए लेखक के रूप डॉ. धनंजय वर्मा नामोल्लेख किया था। डॉ. शिवकुमार मिश्र का संकेत उसी ओर है। धनंजय वर्मा ने डॉ. मदान को पत्र लिखकर सूचित किया कि ''मैं अभी डॉक्टर नहीं हुआ हूँ।'' डॉ. मदान का दिलचस्प उत्तर आया-''मैंने-आपको डॉक्टर समझने की भूल नहीं की। दरअसल हिन्दी में डॉक्टरों की कमी नहीं है, कमी है तो कम्पाउण्डरों की।'' इसके बाद जब-जब और जहाँ-जहाँ उस पुस्तक का सन्दर्भ दिया गया आर उद्धरण दिए गए धनंजय वर्मा, डॉक्टर की उपाधि के साथ ही याद किए गए। पीएच.डी. तो उन्होंने यूजीसी की टीचर फेलोशिप के अन्तर्गत 1980 में की।

डॉ. कमला प्रसाद लिखते हैं-''आलोचक के रूप में वे बहुत जल्द दृश्य में आ गये। मैं सागर विश्वविद्यालय में पढ़ने आया तब धनंजय की किताब 'निरालाः काव्य और व्यक्तिव' हिन्दी के विद्यार्थियों में लोकप्रिय थी। आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी भी इस किताब को पढ़ने का इशारा करते थे।'' डॉ. विजय बहादुर सिंह लिखते हैं-''निराला मुझे मेरे अनजाने ही एक ऐसी दुनिया की ओर खींच लिए जा रहे थे जो साहित्य की थी। तभी मेरे हाथ वह भारी-भरकम आलोचना आई जिसके लेखक का नाम धनंजय वर्मा है। तब मेरे ध्यान में भी यह बात नहीं आई थी कि मैं भी उसी आचार्य की सारस्वत छाया में पहुँचने वाला हूं जिसके प्रकाश-वृत्त में धनंजय वर्मा जैसे युवा- आलोचकों ने अपना संस्कार ग्रहण किया है।... जुलाई उन्नीस सौ बासठ में एम.ए. करने सागर पहुंचा तो विभाग में जिन मेधावी छात्रों की जब कभी चर्चा होती, उनमें से एक नाम धनंजय वर्मा का जरूर होता। मुझे भी अच्छा लगता और स्फूर्ति-सी महसूस होती। विश्वम्भर मानव और (डॉ. रामरतन) भटनागर जी को पढ़कर अब संतुष्ट होना मेरे लिए सम्भव नहीं रह गया। तब जो दो आलोचना पुस्तकें हमे आश्वस्त करती थीं उनमें से एक थी- डॉ. बच्चन सिंह की 'क्रान्तिकारी कवि निराला' और दूसरी स्वयं धनंजय वर्मा की ''निरालाः काव्य और व्यक्तिव।''

कथाकार और सिनेमा विशेषज्ञ श्री प्रभुनाथ सिंह 'आजमी' की पटकथा पर दूरदर्शन के तत्कालीन महानिदेशक कवि श्री लीलाधर

-पृष्ठ 7 पर निरन्तर

रामचरितमानस की रचना

संवत् 1631 का प्रारम्भ हुआ। दैवयोग से उस वर्ष रामनवमी के दिन वैसा ही योग आया जैसा त्रेतायुग में राम-जन्म के दिन था। उस दिन प्रातःकाल तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस की रचना प्रारम्भ की। दो वर्ष, सात महीने और छब्बीस दिन में यह अद्भुत ग्रन्थ सम्पन्न हुआ। संवत् 1633 के मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में राम-विवाह के दिन सातों काण्ड पूर्ण हो गये। इसके बाद भगवान की आज्ञा से तुलसीदास जी काशी चले आये। वहाँ उन्होंने भगवान्त् विश्वनाथ और माता अन्नपूर्णा को श्रीरामचरितमानस सुनाया। रात को पुस्तक विश्वनाथ-मन्दिर में रख दी गयी। प्रातःकाल जब मन्दिर के पट खोले गये तो पुस्तक पर लिखा हुआ पाया गया-सत्यं शिवं सुन्दरम् जिसके नीचे भगवान्त् शंकर की सही (पुष्टि) थी। उस समय वहाँ उपस्थित लोगों ने सत्यं शिवं सुन्दरम्त् की आवाज भी कानों से सुनी। इधर काशी के पण्डितों को जब यह बात पता चली तो उनके मन में ईर्ष्या उत्पन्न हुई। वे दल बनाकर तुलसीदास जी की निन्दा और उस पुस्तक को नष्ट करने का प्रयत्न करने लगे। उन्होंने पुस्तक चुराने के लिये दो चोर भी भेजे। चोरों ने जाकर देखा कि तुलसीदास जी की कुटी के आसपास दो युवक धनुषबाण लिये पहरा दे रहे हैं। दोनों युवक बड़े ही सुन्दर क्रमशः श्याम और

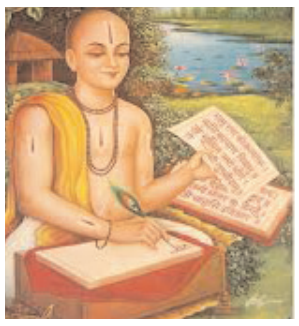

तुलसीदास जी

गौर वर्ण के थे। उनके दर्शन करते ही चोरों की बुद्धि शुद्ध हो गयी। उन्होंने उसी समय से चोरी करना छोड़ दिया और भगवान के भजन में लग गये। तुलसीदास जी ने अपने लिये भगवान्त् को कष्ट हुआ जान कुटी का सारा समान लुटा दिया और पुस्तक अपने मित्र टोडरमल (अकबर के नौरत्नों में एक) के यहाँ रखवा दी। इसके बाद उन्होंने अपनी विलक्षण स्मरण शक्ति से एक दूसरी प्रति लिखी। उसी के आधार पर दूसरी प्रतिलिपियाँ तैयार की गयीं और पुस्तक का प्रचार दिनों-दिन बढ़ने लगा।

इधर काशी के पण्डितों ने और कोई उपाय न देख श्री मधुसूदन सरस्वती नाम के महापण्डित को उस पुस्तक को देखकर अपनी सम्मति देने की प्रार्थना की। मधुसूदन सरस्वती जी ने उसे देखकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और उस पर अपनी ओर से यह टिप्पणी लिख दी - काशी के आनन्द-वन में तुलसीदास साक्षात् चलता-फिरता तुलसी का पौधा है। उसकी काव्य-मंजरी बड़ी ही मनोहर है, जिस पर श्रीराम रूपी भँवरा सदा मँडराता रहता है।

पण्डितों को उनकी इस टिप्पणी पर भी संतोष नहीं हुआ। तब पुस्तक की परीक्षा का एक अन्य उपाय सोचा गया। काशी के विश्वनाथ-मन्दिर में भगवान्त् विश्वनाथ के सामने सबसे ऊपर वेद, उनके नीचे शास्त्र, शास्त्रों के नीचे पुराण और सबके नीचे रामचरितमानस रख दिया गया। प्रातःकाल जब मन्दिर खोला गया तो लोगों ने देखा कि श्रीरामचरितमानस वेदों के ऊपर रखा हुआ है। अब तो सभी पण्डित बड़े लज्जित हुए। उन्होंने तुलसीदास जी से क्षमा माँगी और भक्ति-भाव से उनका चरणोदक लिया। तुलसीदास जी जब काशी के विख्यात् घाट असीघाट पर रहने लगे तो एक रात कलियुग मूर्त रूप धारण कर उनके पास आया और उन्हें पीड़ा पहुँचाने लगा। तुलसीदास जी ने उसी समय हनुमान जी का ध्यान किया। हनुमान जी ने साक्षात् प्रकट होकर उन्हें प्रार्थना के पद रचने को कहा, इसके पश्चात् उन्होंने अपनी अन्तिम कृति विनय-पत्रिका लिखी और उसे भगवान के चरणों में समर्पित कर दिया। श्रीराम जी ने उस पर स्वयं अपने हस्ताक्षर कर दिये और तुलसीदास जी को निर्भय कर दिया।

पत्रकारिता के शिखर

राजेन्द्र माथुर, हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रकार थे। स्वाधीन भारत में हिन्दी पत्रकारिता को स्थापित करने वाले स्व. राजेन्द्र माथुर का पूरा जीवन हिन्दी के लिये समर्पित रहा। मालवा अंचल के इस प्रतिभावान पत्रकार ने यह प्रमाणित कर दिया कि ऊंचाई प्राप्त करने के

राजेन्द्र माथुर जयन्ती/ 5 अगस्त

लिये महानगर में पैदा होना आवश्यक नहीं है। इंदौर से प्रकाशित नई दुनिया से अपनी पत्रकारिता यात्रा आरंभ करने वाले श्री माथुर हिन्दी राष्ट्रीय दैनिक नवभारत टाइम्स के सम्पादक बने। आरंभ से अपनी आखिरी सांस तक ठेठ हिन्दी पत्रकार का चोला पहने रहे।

तमस के रचियता

रावलपिंडी पाकिस्तान में जन्मे भीष्म साहनी (8 अगस्त 1915- 11 जुलाई 2003) आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से थे। 1937 में लाहौर गवर्नमेन्ट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. करने के बाद साहनी ने 1958 में पंजाब विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि हासिल की। भारत पाकिस्तान विभाजन के पूर्व अवैतनिक शिक्षक होने के साथ-साथ ये व्यापार भी करते थे। विभाजन के बाद उन्होंने भारत आकर समाचारपत्रों में लिखने का काम किया। बाद में भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) से जा मिले। इसके पश्चात अंबाला और अमृतसर में अध्यापक रहने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्रोफेसर बने। 1957 से 1963 तक मास्को में विदेशी भाषा प्रकाशन गृह (फॉरेन लॅग्वेजेस पब्लिकेशन हाउस) में अनुवादक के काम में कार्यरत रहे। यहां उन्होंने करीब दो दर्जन रूसी किताबों का हिंदी में रूपांतर किया। 1965 से 1967 तक दो सालों में उन्होंने नयी कहानियां नामक पत्रिका का सम्पादन किया। वे प्रगतिशील लेखक संघ और अफ्रो-एशियायी लेखक संघ (एफ्रो एशियन राइटर्स असोसिएशन) से भी जुड़े रहे। 1993 से 97 तक वे साहित्य अकादमी के कार्यकारी समीति के सदस्य रहे। भीष्म साहनी को हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। वे मानवीय मूल्यों के लिए हिमायती रहे और उन्होंने विचारधारा को अपने ऊपर कभी हावी नहीं होने दिया। वामपंथी विचारधारा के साथ जुड़े होने के साथ-साथ वे मानवीय मूल्यों को कभी आंखो से ओझल नहीं करते थे।

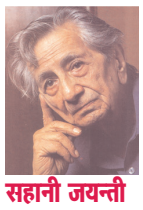

भीष्म सहानी जयन्ती

आपाधापी और उठापटक के युग में भीष्म साहनी का व्यक्तित्व बिल्कुल अलग था। उन्हें उनके लेखन के लिए तो स्मरण किया ही जाएगा लेकिन अपनी सहृदयता के लिए वे चिरस्मरणीय रहेंगे। भीष्म साहनी हिन्दी फ़िल्मों के जाने-माने अभिनेता बलराज साहनी के छोटे भाई थे। उन्हें 1975 में 'तमस' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1975 में शिरोमणि लेखक अवार्ड (पंजाब सरकार), 1980 में एफ्रो एशियन राइटर्स असोसिएशन का लोटस अवार्ड, 1983 में सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड तथा 1998 में भारत सरकार के पद्मभूषण अलंकरण से विभूषित किया गया। उनके उपन्यास 'तमस' पर 1986 में एक फिल्म का निर्माण भी किया गया था। प्रमुख रचनाएँ है, उपन्यास - झरोखे, तमस, बसन्ती, मय्यादास की माड़ी, कुन्तो, नीलू निलिमा नीलोफर। कहानी संग्रह - मेरी प्रिय कहानियां, भाग्यरेखा, वांगचू, निशाचर। नाटक - हानूश (1977), माधवी (1984), कबिरा खड़ा बजार में (1985), मुआवज़े (1993)। जीवनी - बलराज माय ब्रदर, बालकथा- गुलेल का खेल।

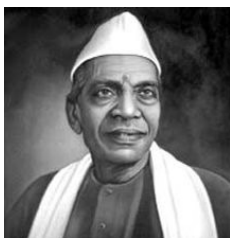

मैथिलीशरण गुप्त जयन्ती/ 3 अगस्त

आर्य

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी
आओ विचारें आज मिल कर, यह समस्याएं सभी
भू लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहां
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल कहां
संपूर्ण देशों से अधिक, किस देश का उत्कर्ष है
उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन, भारतवर्ष है
यह पुण्य भूमि प्रसिद्ध है, इसके निवासी आर्य हैं
विद्या कला कौशल सबके, जो प्रथम आचार्य हैं
संतान उनकी आज यद्यपि, हम अधोगति में पड़े
पर चिन्ह उनकी उच्चता के, आज भी कुछ हैं खड़े
वे आर्य ही थे जो कभी, अपने लिये जीते न थे
वे स्वार्थ रत हो मोह की, मदिरा कभी पीते न थे
वे मंदिनी तल में, सुकृति के बीज बोते थे सदा
परदुःख देख दयालुता से, द्रवित होते थे सदा
संसार के उपकार हित, जब जन्म लेते थे सभी
निश्चेष्ट हो कर किस तरह से, बैठ सकते थे कभी
फैला यहीं से ज्ञान का, आलोक सब संसार में
जागी यहीं थी, जग रही जो ज्योति अब संसार में
वे मोह बंधन मुक्त थे, स्वच्छंद थे, स्वाधीन थे
सम्पूर्ण सुख संयुक्त थे, वे शांति शिखरासीन थे
मन से, वचन से, कर्म से, वे प्रभु भजन में लीन थे
विख्यात ब्रह्मानंद नद के, वे मनोहर मीन थे।

-मैथिलीशरण गुप्त

-सुभद्रकुमारी चौहान जयन्ती/5 अगस्त

मेरा नया बचपन

बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी॥
चिंता-रहित खेलना-खाना वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
कैसे भूला जा सकता है बचपन का अतुलित आनंद?
ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था छुआछूत किसने जानी?
बनी हुई थी वहाँ झोंपड़ी और चीथड़ों में रानी॥
किये दूध के कुल्ले मैंने चूस अँगूठा सुधा पिया।
किलकारी किल्लोल मचाकर सूना घर आबाद किया॥
रोना और मचल जाना भी क्या आनंद दिखाते थे।
बड़े-बड़े मोती-से आँसू जयमाला पहनाते थे॥

-सुभद्रकुमारी चौहान

भारतीय दर्शन कोष के निर्माता

बच्चूलाल अवस्थी संस्कृत भाषा के प्रतिष्ठित विद्वान और साहित्यकार थे। उनके द्वारा रचित एक कविता संकलन 'प्रतानिनी' के लिये उन्हें सन् 1998 में

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

उनकी प्रसिद्ध पुस्तकें- प्रतानिनी, भारतीय-दर्शन-बृहत्कोश आदि है। वे कालिदास अकादमी, उज्जैन के आचार्यकुल के अधिष्ठाता रहे। वे संस्कृत साहित्य, दर्शन और व्याकरण के उद्भट विद्वान थे। वे श्रीमद् भागवात की अनूठी व्याख्या करते थे।

संस्कृत के साथ ही डॉ. बच्चूलाल अवस्थी उर्दू और फारसी के भी अच्छे जानकार थे। डॉ. अवस्थी खरे और स्वष्टवादी व्यक्तित्व के धनी थे। उनका अभिनन्दनग्रंथ 'घाघरा से शिप्रा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

अकविता के कवि

जगदीश चतुर्वेदी हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण कवि थे। उनका जन्म 15 अगस्त 1929 को हुआ था। वे केंद्रीय हिन्दी निदेशालय में उपनिदेशक एवं 'भाषा' तथा 'वार्षिकी' के सम्पादक रहे।

इनके छः कविता-संग्रह, सात कहानी-संग्रह, नाटक तथा समीक्षा ग्रंथ प्रकाशित हैं।

जगदीश चतुर्वेदी जयन्ती/ 3 अगस्त

समाधिस्थ

गुम्बदों पर अंधेरा ठहर गया है
एक काली नदी बहती है अंतस्तल के निबिड़ अंधकार में।
कगारों पर पडे हैं कटे हुए परिंदों के अनगिनत पंख
और उन पगचिह्नों के निशान
जो शांति की खोज में निर्वासित घूमते रहे।
इतना वक्त नहीं रहा है अब कि इतिहास को
मुट्ठी में कैद किया जाए
चिनार के दरख्तों से घायल संगीत की लहरें उठती हैं
और तलहटी में फैल जाती हैं
कुछ अश्वारोही जो निकले थे दिग्विजय करने
अपने अश्वों के नथुनों से लगातार निकलते फेन को देखकर
मर्माहत हो गए हैं।
एक समय जो विश्वजेता होता है
वो दूसरे क्षण कितना निरीह हो जाता है
जैसे घायल नेपोलियन जंग से टूटा हुआ लौटा हो
और फौजी डॉक्टर के हाथों में
मासूम बच्चा बन गया हो।
कितने ही युध्द शरीर पर छोड देते हैं निशान
और घाव भरने के साथ
ईष्या और शत्रुता के कई गहरे घाव
अपने आप कुंद हो जाते हैं।
कितने ही तवारीख के पन्ने केवल ईष्या से भरे हैं
सच लगता है कि केवल गौतम बुध्द
जो ईष्या और रोग और आभिजात्य के
नकली मुखौटों से मुक्ति पा सका था
सुख भी उतना ही तकलीफदेह है जितना दुःख
सुख भी बहुत अकेला कर जाता है
मानो दुःख के समय
किसी आत्मीय की सांत्वना के अभाव में
सिसकता हुआ एक रोगी कक्ष।
शांति के वृक्षों को तलाशते हुए
कई संत शरीर और नदियों के पाट
दीमक और काई के शिकार हो गए
पर शांति न मिली
किसी प्रकृति या वनखण्ड या वातावरण से पराङ्मुख होकर
शांति खड़ी उसका इंतजार करती रही
एक अंधेरी नदी के किनारे
जहां कनेर के लाल फूलों पर कोयलकूक रही थी
और
चम्पा का लम्बा दरख्त
सिर पर गिरा रहा था
गोल, चमकीले, श्वेत, चम्पई फूल।

– जगदीश चतुर्वेदी

राई में बनेगा देश का तीसरा खेल विश्वविद्यालय

चंडीगढ़। सोनीपत जिले के राई में राज्य का पहला और देश का तीसरा खेल विश्वविद्यालय बनेगा। यहां हर खेल के लिए सेंटर फार एक्सीलेंस होगा, जिसमें अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी और कोच तैयार हो सकेंगे। अभी तक खिलाड़ियों को एनआईएस सर्टिफिकेट अथवा कोर्स करने के लिए दूसरे प्रदेशों में जाना पड़ता था, मगर अब यहां खिलाड़ी व कोच के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय मानक के अंपायर भी तैयार होंगे। मुख्यमंत्री मनोहरलाल की अध्यक्षता में हुई राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में मोतीलाल नेहरू स्पोर्ट्स स्कूल, राई को खेल विश्वविद्यालय बनाने के प्रस्ताव को मंजूरी प्रदान की गई। अब सरकार मानसून सत्र में ही यूनिवर्सिटी का विधेयक विधानसभा में पेश करेगी, ताकि यूनिवर्सिटी पर काम शुरू करवाया जा सके। बैठक के बाद कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ ने बताया कि हरियाणा खेल विश्वविद्यालय प्रदेश में अंतरराष्ट्रीय मानकों को पूरा वाला पहला खेल विश्वविद्यालय होगा। इस समय खेल विज्ञान, खेल प्रौद्योगिकी, खेल प्रबंधन और उच्च प्रदर्शन प्रशिक्षण में कमी महसूस की जा रही है। खेल विश्वविद्यालय बनने के बाद इस कमी को खत्म किया जा सकेगा। धनखड़ के अनुसार खेल विज्ञान, खेल चिकित्सा और खेल प्रौद्योगिकी में नवीनतम शोध यहां किए जाएंगे। विश्वविद्यालय में दूरस्थ परिसर (डिस्टेंस एजुकेशन केंद्र) स्थापित करने पर भी काम होगा। कैबिनेट मीटिंग के बाद खेल मंत्री अनिल विज ने कहा कि खेलों पर आधारित यह पहला विश्वविद्यालय होगा। इसमें किसी नामचीन खिलाड़ी और खेलों का अनुभव रखने वाले व्यक्ति को कुलपति नियुक्त किया जाएगा। लगभग 630 करोड़ रुपए की लागत इस पर आएगी। इसके लिए अतिरिक्त जमीन खरीदने की जरूरत नहीं पड़ेगी। स्पोर्ट्स स्कूल, राई के पास पहले ही 350 एकड़ से अधिक जमीन है।राई में चल रहा स्पोर्ट्स स्कूल भी चलता रहेगा। यूनिवर्सिटी बनने के बाद यह कैम्पस स्कूल का रूप ले लेगा।

अगले साल भारत का सूर्य अभियान

नई दिल्ली। चंद्रयान-2 के पक्षेपण के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंसाधन संगठन इसरो की 2020 की पहली छमाही में सूरज के परिमंडल अध्ययन के लिए सूर्य मिशन आदित्य एल-1 को अन्जाम देने की योजना है। आदित्य एल-1 का लक्ष्य सूर्य के तेजो मंडल परिमंडल अध्ययन करने का होगा, जिसमें हजारो किलोमीटर तक फैली सूर्य की बाहरी परत है इसका मकसद यह पता लगाना है कि सूर्य के सतह तापमान छ हजार कैलविन से कोरोना का तापमान 300 से गुना ज्यादा क्यों है जबकि कोरोना इससे काफी उपर है इसरो ने मिशन के बारे मे सूचना साझा करते हुए अपनी वेबसाइट पर कहा परिमंडल कैसे इतना गर्म हो जाता है सौर भौतिकी में अभी तक इसका उत्तर नहीं मिला है। इसरो के प्रमुख के सिवन ने कहा कि मिषन की 2020 की पहली छमाही में प्रक्षेपित करने की योजना है। सूर्य की परिमंडल का विष्लेषण इसलिए किये जाने की जरूरत है क्योंकि जलवायु परिवर्तन पर इसका बडा प्रभाव है। सिवन अंतरिक्ष विभाग के सचिव भी हैं उनके मुताबिक आदित्य एल-1 अतिरिक्त प्रयोगो के साथ सूर्य के बह्ममंडल, वर्णमंडल और परिमंडल का निरीक्षण उपलब्ध करा सकता है। के. सिवन ने कहा है कि आदित्य एल-1 पृथ्वी से 15 लाख किलोमीटर की दूरी पर स्थित होगा। वहां से यहा हमेशा सूर्य की और देखेगा। आदित्य एल-1 सूर्य के फोटो पियर प्रोमोस पियर और तेजो मंडल का अध्ययन कर सकता है। यह सूर्य से निकलने वाले विस्फोटक कणो का अध्ययन भी करेगा। इसरो के अनुसार यह कण पृथ्वी के नीचे वाले कक्ष में किसी काम नही आते। इन्हें पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र से बाहर रखने की जरूरत है। इसरो प्रमुख सिवन के मुताबिक चंद्रयान-2 के बाद हम चन्द्रमा पर एक यान भेजेंगे। तीसरा चंद्रयान-मिशन 2020 के अंत तक पूरा होगा। इसमें भारतीय रोबोट को चांद की सतह पर उतारा जाएगा, जो वहां जाकर विभिन्न प्रकार की जांच करेग। के. सिवन के मुताबिक 2021 नासा और इसरो मिलकर अंतरिक्ष में दुनिया का सबसे महंगा अर्थ आब्जरवेशन सेटेलाईट स्थापित करेंगे।

लेडी श्रीराम कॉलेज से राजनीति विज्ञान पढ़ेंगी मनु भाकर

नई दिल्ली। राष्ट्र मंडल खेल और युवा ओलंपिक की स्वर्ण

पदक विजेता निशानेबाज मनु भाकर ने दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी श्री राम कालेज में राजनीति विज्ञान में प्रवेश लिया है। मनु ने खेल कोटे से आवेदन किया था। वह किसी भी कालेज के किसी भी कोर्स में प्रवेश की पात्रता रखती थी।

चींटी जैसे रोबोट की मदद से हो सकेगा इलाज

वॉशिंगटन। कोई भी अपने शरीर पर चींटी चलना शायद ही पसंद करे,लेकिन आने वाले दिनों में शरीर के अंदर भी चींटियां रैंगती नजर आ सकती हैं। दरअसल वैज्ञानिकों ने चींटी के आकार का ऐसा रोबोट तैयार किया है, जो शरीर के अंदर जा कर इलाज में मदद कर सकता है। अमेरिका के जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के शोधकर्ताओं ने इस विशेष रोबोट को तैयार किया है।3- डी प्रिंटिंग की मदद से तैयार इस रोबोट का आकार दुनिया की सबसे छोटी चींटी जितना है।यह रोबोट किसी अल्ट्रासाउंड या छोटे स्पीकर से पैदा होने वाले कंपन (वाइब्रेशन)की मदद से चलता है।

आलोक 1550 बच्चों को दे रहे हैं निशुल्क शिक्षा

सतना। गरीब बच्चों को शिक्षित कर नई राह को प्रदान करने का जूनुन देखना है तो आलोक सर की कोचिंग क्लास देख आइये। बाहर साइकल और क्लास रूम में बच्चों की भीड देख आपको लगेगा कि किसी कॉलेज में आ गये हैं। आलोक सर रूपहले पर्दे पर धमाल मचा रहे फिल्म 'सुपर 30' के आनंद कुमार सर को भी मात दे रहे हैं। 1550 बच्चों को फ्री में कोचिंग दे रहे हैं। यह सिलसिला करीब 23 साल से चल रहा हैं। व्यंकट क्रंमाक 2 स्कूल मे बतौर षिक्षक आलोक सिंह की कोचिंग 3 बेच में चलती है। पहला और दूसरा बेच रामाकृष्ण कॉलेज के एक कक्ष में क्रमषः सुबह 6 बजे से 8 बजे तक चलता है। जबकि तीसरा बेच स्कूल में ही चलता है। यहां विभिन्न स्कूलों के छात्र पड़ने आते है। छात्र बताते हैं कि आगे बैठने के लिये आधे घंटे पहले पहुंच कर लाईन लगानी पडती है। आलोक सिंह कक्षा 12 तक के विद्यार्थियों को फिजिक्स पढ़ाते हैं। अब तक उनके कई विद्यार्थी आईटीआई सहित कई प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता हासिल कर भी चुके हैं एमपीपीएसी और यूपीएसी में चयनित हुए हैं। 05 जून 1968 में सतना शहर से 10 किलोमीटर दूर मरोहा गावं के क्षत्रिय परिवार में आलोक सिंह का जन्म हुआ था। पिता रमनेश सिंह किसान थे लेकिन उन्होंने आलोक की पढ़ाई में कोई कसर नहीं छोड़ी स्कूली शिक्षा कानपुर के नवाब गंज स्थित एक निजी स्कूल में हुई। इसके बाद सतना के डिग्री कालेज से बीएससी और फिजिक्स से एमएससी की सन 1992 में लेक्चरर बने। इनके एक बेटा और बेटी है। बेटा आदित्य बैंगलरू के साउथ इंडियन बैंक में पीओ है। बिटिया अमूल्या कक्षा 11 की छात्रा है आलोक कहते है कि 28 साल की नौकरी में पहले 23 साल बच्चों को निशुल्क पढ़ाया कुछ समय के लिये विचलित हुआ और पैसे लेने लगा लेकिन जल्द ही गलती का अहसास हो गया तब प्रण लिया कि जब तक गले से आवाज निकलेगी तब तक बच्चों को मुफ्त में पढाउंगा।

शिक्षिका निशात खान के समर्पण से मिसाल बन गया है शा. प्राथमिक स्कूल

धार। जेल रोड के शासकीय प्राथमिक विद्यालय के बच्चों का ज्ञान कौशल देख हर कोई हैरान है। बड़ी बात यह है कि यह स्कूल पिछले साल ही शुरू हुआ है। एक साल में ही बच्चों ने अपनी उम्र से कहीं अधिक सीख लिया। नन्हें-मुन्ने तुतलाते हुए किताब पढ़कर सुना देते हैं, जबकि कक्षा दूसरी के बच्चे अंग्रेजी वर्णमाला एक सांस में ही बोल लेते हैं। वरिष्ठ अधिकारी भी जब बच्चों के ज्ञान कौशल को परखते हैं तो वे भी तोतली भाषा में उत्तर सुन दंग रह जाते हैं। बच्चों की प्रतिभा को निखारने में यहां की शिक्षिका निशात खान का अहम योगदान है। उनका कहना है कि यहां तीन शिक्षकों की आवश्यकता है। अधिकांश शासकीय स्कूलों में बच्चों की उपस्थिति कम रहती है। इसके विपरीत जेल रोड के प्राथमिक विद्यालय में न सिर्फ बच्चे आते हैं, बल्कि पूरे समय पढ़ाई भी करते हैं। यही कारण है कि 20 बच्चों से शुरू हुए स्कूल में अब 78 बच्चे कक्षा पहली से पांचवी तक दर्ज हैं। जेलरोड वार्ड-15 बस्ती में अधिकांश मजदूर पेशा लोग हैं, जो दूर होने के चलते बच्चों को स्कूल में प्रवेश नहीं दिला पाए थे। यहां पिछले वर्ष प्राथमिक विद्यालय खोला गया। शुरूआत में बच्चों को प्रवेश दिलाने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। शिक्षिका खान ने जनसहयोग से यहां शैक्षणिक साम्रगी और अन्य सुविधाए जुटाईं। यहां के एक शिक्षक को बीएसी का प्रभार दे दिया गया है। पढ़ाई का सारा भार शिक्षिका निशात खान पर है।

अनपढ़ होने का दाग धोने के लिए ग्रामीणों ने स्वयं शुरू किया स्कूल

सतना। चित्रकूट का बटोही गांव साक्षरता से दूर ही था। इस गांव से बड़ी संख्या में लोग पलायन कर चुके हैं। अनपढ़ होने का दाग मिटाने के लिए ग्रामीणों ने चंदा कर 'भविष्य की नींव रख दी। तय किया कि अब स्कूल के लिए सरकार से गुहार नहीं लगाएंगे। खुद के दम पर स्कूल का निर्माण कराएंगे। देखते ही देखते 50 घरों की बस्ती में एक झोपड़ी में स्कूल का निर्माण करा दिया। गांव के 50 से अधिक बच्चों के लिए ड्रेस खरीदी और नए स्कूल में कक्षा लग गई। विद्यालय का नाम 'एकलव्य' रखा गया। इस कार्य में उनका साथ दिया सतना और चित्रकूट के कुछ समाजसेवियों ने। ग्रामीणों के उत्साह को देखते हुए शिक्षक विनोद सिंह ने बच्चों को पढ़ाने का निर्णय लिया। विद्यालय में गांव के 50 से अधिक बच्चों ने दाखिला लिया है। इनकी उम्र 4 से 15 साल है। पहले दिन 40 बच्चे पढ़ाई करने पहुंचे। स्कूल खुलने के बाद कलेक्टर सतेंद्र सिंह गांव पहुंचे। ग्रामीणों की बात सुनी और स्कूल देखा। साथ ही आश्वासन दिया कि अब गांव में जल्द ही अधिकृत स्कूल का संचालन कराया जाएगा। ग्रामीणों के मुताबिक गांव में कोई भी पढ़ा-लिखा नहीं है।

5सौ से भी अधिक बच्चों को निःशुल्क पढ़ा चुके हैं, लिमये

इन्दौर। दुनियादारी की चकाचौध से कोसों दूर एक गुरू ऐसे भी है, जो बच्चों का भविष्य संवारने के लिए न सिर्फ हरा महीने मिलने वाली 50हजार रुपए की पेंशन खर्च कर देते हैं बल्कि उन्हें समय भी दे रहे हैं। ये हैं सेवानिवृत्त शिक्षक श्यामगोविंद लिमये । उम्र भले ही 79 वर्ष हो गई हे, किंतु वे नई पीढ़ी का भविष्य गढ़ने में पीछे नहीं है । 1997 से अब तक वे 500 से अधिक बच्चों को निशुल्क पढ़ा चुके हैं, वहीं इंदौर -उज्जैन वे अलीराजपुर में आठ छात्रों आठ छात्रों को पढ़ाकर प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी भी करा रहे हैं। आज उनके पढ़ाए बच्चे डिप्टी कलेक्टर, डीएसपी, इंजीनियर समेत शिक्षक , पटवारी व अन्य पूर्णिमा के मैके पर ऐसे ही शिक्षक की कहानी...।

शाजापुर के स्टेशन रोड निवासी श्यामगोविंद लिमये ने 1997 में हाई स्कूल सुंदरसी प्राचार्य के पद से छह वर्ष पूर्व ही स्वैच्छिक सेवानिवृति ले ली थी, तभी से उन्होंने बच्चों की निशुल्क पढ़ाने का बीड़ा उठाया। अकेले शाजापुर में ही 5000 से अधिक बच्चों को उन्होंने निःशुल्क पढ़ाया फिर वे आलीराजपुर, झाबुआ व अन्य जिलों में जाकर आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के बच्चों केा शिक्षित करने में जुट गए। कई छात्राओं की वे अपने खर्च पर शादी भी करवा चुके हैं। अभी वे इंदौर में रहकर छात्राओं को पढ़ा रहें है, जो पीएससी परीक्षा की तैयारी भी कर रही हैं।

सेवानिवृत्त शिक्षक लिमये को पैंशन के रूप में प्रतिमाह 50हजार रुपए मिलते हैं। लगभग पूरी राशि वे छात्राओं पर ही खर्च कर देते है वर्तमान में उन्होंने इंदौर , उज्जैन व आलीराजपुर में कमरे किराये पर ले रखें है। जहां आठ छात्राओं के रहने खाने का इंतजाम कर रखा है। इंदौर में भी किराए का मकान लिया है वे खुद यहां रहने वाली तीन छात्राओं के लिए अपने हाथों से भोजन तैयार करते है। वे खुद यहां रहने वाली तीन छात्राओं के अपने हाथो से भोजन तैयार करते है।छात्राएं सुबह प्रतियागी परिक्षा तैयारी करने के लिए कोचिंग चली जाती हैऔर शाम को ही लोटती है उनका कहना है कि इस कार्य में उनके मित्र भी सहयोग करते हैं। उनके पढ़ाए कई छात्र वर्तमान में निजी व शासकीय सेवा में कार्यरत होकर बड़े पदों पर भी हैं। इनमें दशावंता डीएसपी है तो शीतल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर चुकी हैं।

बेटा अमेरिका व दूसरा शाजापुर में सेवानिवृत्त शिक्षक लिमये के दो पुत्र हैं। एक अमेरिका में तो दूसरे बेटे संदीप लिमये शाजापुर में शिक्षक हैं। उनकी पत्नी भी शिक्षिका ही रही है। बेटे ने कई बार उनसे अमेरिका चलकर वहीं रहने की बात उनसे अमेरिका चलकर वहीं रहने की बात भी कहीं किंतु वे नहीं गए। वर्तमान में वे इंदौर में ही रह रहे है किन्तु शाजापुर आते हे तो अपने पढ़ाए बच्चों के घर जाना नहीं भूलते ।

दो ग्रह थिया और टेलस के टकराने से बने पृथ्वी और चांद

हमार चंद्रमा अन्य पिंडो की अपेक्षा थोड़ा सुस्त हैं। अपनी पुस्तक 'द मून'में ओलिवर मोर्टन कहते हैं, नील आर्मस्ट्रॉन्ग के चांद की सतह गिराह पर चांद फिर हमारी सोच में सक्रिय हो गया। समय समय पर चंद्रमा की परिभाषा भी बदलती रही है। मॉर्टन इस बात से खुश हैं कि कई राष्ट्रा और निजी कंपनियों चांद की सतह पर जाने और उस पर शोध के लिए एक बार फिर उत्साहित हैं। जापानी अरबपति युसाकू मेजावा मेजावा ने 2023 में चांद पर जाने के लिए अपना मौर्टन टिकट भी खरीद लिया है। हालांकि उन्हें पता है कि इस मिशन में देरी ही सकती है, क्योंकि अंतरिक्ष यान के साथ इस मिशन के लिए जरूरी परीक्षण भी अभी नहीं किए गए हैं। फिर भी मेजावा ने इस विश्वास के साथ इसके लिए पैसे खर्च किए है कि मस्क की कंपनी स्पेसएक्स उन्हें वहां ले जाएगी। इसी महात्वाकांक्षा के चलते जेफ बेजोस अपनी अंतरिक्ष कंपनी ब्लू ऑरिजिन पर अरबों रुपए खर्च कर रहे हैं। मोर्टन अपनी किताब मे चार अरब वर्ष पुरानी उस भौगोलिक उठा-पटक का जिक्र करते हैं, जो सौर मंडल की सबसे विध्वंसक घटना थी। जब दो ग्रह थिया और टेलस एक दूसरे से टकराए थे। इस घटना के बाद इनकी गति और द्रव्यमान बदला जाता है। यहीं से टेलस और थिया की जगह पृथ्वी और चंद्रमा की उत्पति हुई। कुछ मिलाकर चंद्रमा के रहस्यों की बारीकी से पड़ताल करने का समय आ गया हैं।

प्रीति पटेल बनीं ब्रिटेन की गृह मंत्री

लंदन। ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन ने अपनी कैबिनेट में तीन भारतवंशी और एक पाकिस्तानी मूल समेत 31 मंत्री बनाए हैं। उन्हीं की पार्टी की पूर्व प्रधानमंत्री थेरेसा में की कैबिनेट में 29 मंत्री थे। बोरिस ने थेरेसा मे की कैबिनेट के 17 मंत्रियों को हटा दिया है। यह 60 साल में मंत्रिमंडल में सबसे बड़ा फेरबदल है। बोरिस ने ब्रेक्जिट मामले पर साथ देने वालों को जमकर प्रमोशन दिया है। मंत्रियों की औसत उम्र 48 साल है।

भारतीय मूल की प्रीति पटेल को गृहमंत्री बनाया है, जो इस पद पर पहुंचने वाली पहली भारतवंशी हैं। प्रीति को 2017 में थेरेसा ने कैबिनेट से बाहर कर दिया था। दूसरे भारतवंशी आलोक शर्मा को इंटरनेशनल डेवलपमेंट राज्य मंत्री बनाया है। इन्फोसिस के संस्थापक नारायण मूर्ति के दामाद ऋषि सुनाक को वित्त राज्य मंत्री की जिम्मेदारी दी है। पाकिस्तानी मूल के साजिद जाविद को वित्त मंत्री बनाया गया है। थेरेसा मे सरकार में वे गृह मंत्री थे।

प्रीति पटेल विटहैम से 2010 में सांसद चुनी गई थीं। 2015,2017 में भी वह यहीं से जीती। 45 साल की प्रीति कैमरन सरकार में रोजगार मंत्री रह चुकी हैं। उनके माता पिता मूल रूप से गुजरात के थे, जो 60 के दशक में युगांडा से इंग्लैड आ गए थे। नवंबर 2017 में प्रीति ने निजी यात्रा के दौरान सरकार को जानकारी दिए बिना इजरायली पीएम बेंजायिन नेतन्याहू से मुलाकात की थी। इसको लेकर हुए विवाद के बाद उन्हें अंतरराष्ट्रीय विकास मंत्री के पद से इस्तीफा देना पड़ा था।

बोरलाय गांव की महिला कृषक ललिता बनीं राष्ट्रीय 'हलधर'

सिलावद (बड़वानी)जिला मुख्यालय से 10 किमी दूर स्थित छोटे से गांव बोरलाय में रहने वालीं ललिता मुकाती राष्ट्रीय 'हलधर' बनी हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 91वें स्थापना दिवस के मौके पर नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में ललिता को हलधर जैविक कृषक राष्ट्रीय सम्मान दिया गया। केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्रसिंह तोमर ,कृषि राज्यमंत्री पुरूषोत्तम रूपाला व कैलाश चौधरी, कृषि सचिव सुशील कुमार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक त्रिलोचन महापात्रा व उपमहानिदेशक एके सिंह आदि की उपस्थिति में उन्हें सम्मानित किया गया। ललिता को यह सम्मान टपक विधि से सिंचाई और जैविक खेती के लिए दिया गया है। ललिताबाई की सफलता की कहानी अन्य किसानों और खासतौर पर महिलाओं के लिए काफी प्रेरक हैं।उन्होंने बताया पति सुरेश मुकाती कृषि विज्ञान से स्नातक हैं। करीब 20 साल पहले पति से खेती के गुर सीखने शुरू किए। अब 37.5 एकड़ खेत में पति के सहयोग से खुद खेती करती हैं। खेती सीखने के लिए वे इटली जर्मनी ऑस्ट्रिया, दुबई जा चुकी हैं। ललिताबाई ने बताया कि उन्होंने वर्ष 2015 से अपने खेत में कीटनाशक डालना पूरी तरह बंद कर दिया। गोबर, गोमूत्र और रसोई से निकलने वाले कचरे से ही उन्होंने कीटनाशक तैयार किया। म.प्र. राज्य प्रमाणीकरण संस्था भोपाल से पंजीकृत 37.5 एकड़ भूमि में खेती करती हैं।अभी 5एकड़ में हल्दी, 4एकड़ में देशी मुंग, 2एकड़ में देशी गिरनार मूंगफली, 2एकड़ में मक्का, 1एकड़ में अदरक, 20एकड़ में सीताफल का बगीचा , साढ़े तीन एकड़ में आंवला चीकू और नींबू लगाए हैं।टपक सिंचाई पद्धति वह विधि है, जिसमें जल को बूंद -बूंद के रूप में फसलों के जड़ क्षेत्र में एक छोटी व्यास की प्लास्टिक पाइप से दिया जाता है।

ललिताबाई खेती में टपक सिंचाई का ही उपयोग करती हैं। ललिताबाई के घर में बायोगैस से ही खाना पकता है। उन्होंने बिजली के खर्च को भी जीरो कर लिया है। घर में लगे। सोलर पैनल से खेती के अलावा घर की जरूरत की बिजली बना लेती हैं।

'निराला.....

पृष्ठ 4 से निरन्तर

मंडलोई के निर्देशन में धनंजय वर्मा के जीवन और आलोचना कर्म पर निर्मित दूरदर्शन के वृत्तचित्र 'आलोचक का अंतरंग' में प्रख्यात आलोचक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल कहते है- ''धनंजय वर्मा ने निराला पर जो शोध कार्य किया, उसमें उन्होंने एक केन्द्र बनाया और यह स्थापना की, कि निराला छायावाद के ही बड़े रचनाकार नहीं हैं बल्कि आधुनिक हिन्दी कविता के सबसे बड़े रचनाकार नही हैं। दूसरा काम यह किया कि निराला की जो दो बड़ी सशक्त रचनाएँ हैं- 'राम की शक्ति पूजा' और 'तुलसीदास' उनमें प्रबन्ध- प्रतिभा का जो ढांचा तोड़ दिया था, उस छायावादी ढांचे को धनंजय वर्मा ने रचनाओं के भीतर प्रवेश करके प्रस्तुत किया।'' आलोचना में छायावाद के संस्थापक युगप्रवर्तक आलोचक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी द्वारा लिखा गया 'प्राक्कथन' तो इस पुस्तक के महत्व को प्रतिपादित करता ही है।

अमृतसर हो या कोचिन, औरंगाबाद-हैदराबाद-मुम्बई हो या इलाहाबाद-पटना-कलकत्ता, सम्मेलनों और संगोष्ठियों में जहां भी धनंजय वर्मा शामिल हुए, विद्यार्थियों और प्रोफेसरों के बीच उनकी पहचान 'निराला वाले धनंजय वर्मा' के रूप में हुई।

1965 में इसका दूसरा संस्करण आया। इसके तीसरे संस्करण में इसका लगभग पुनर्लेखन हो गया और वह 'निराला-काव्यः पुनर्मूल्यांकन' के नाम से 1973 में प्रकाशित हुई। कवि राजेन्द्र शर्मा के शब्दों में ''आज भी निराला साहित्य को समझने के लिए, वह एक संदर्भ ग्रंथ की तरह उपयोग में आती है।''

वर्षों से वह अनुपलब्ध है। यहाँ तक कि स्वयं धनंजय वर्मा की एकमात्र प्रति भी दुर्घटनावश उनके एक मित्र से खो गयी। सुखद संयोग कि डॉ. रेखा (गुप्ता) कस्तवार से उसकी एक प्रति प्राप्त हो गयी। आदरणीय महेन्द्र गगन जी ने कृपापूर्वक उसे पुनमुर्दित करने की पहल की और अब 'निराला-काव्यः पुनर्मूल्याकंन' नये रूप रंग में प्रस्तुत है। (सन 2019 में प्रकाशित डॉ.धनंजय वर्मा की पुस्तक 'निराला काव्यः पुनर्मूल्यांकन का पुरोवाक्)

अभिनेत्री के रूप में नाटकों ने ही मुझे आत्मविश्वास दिया- निमरत कौर

अभिनेत्री निमरत कौर ने बताया है कि पहला काम मुझे दिल्ली के प्रगति मैदान में एक बिजनेस फेयर में 20 मिनट की म्यूजिकल परफॉर्मेंस देने का मिला। था। फर्स्ट ईयर में पढ़ रही 17 वर्ष की लड़की को इस एक सप्ताह के काम के लिए 10 हजार रुपए का भुगतान मिलना बड़ी बात थी, इसी से मेरा बैंक खाता खुला। एंकरिंग का काम मिलने लगा और पॉकेट मनी बढ़ती गई। कॉर्पोरेट इवेंट्स और शॉपिंग मॉल के सेटअप में भीड़ को बांधे रखना मेरा काम था और मुझे इसके पैसे मिल रहे थे। एक साबुन के विज्ञापन में छपी मेरी तस्वीर के लिए मुझे 3 हजार रुपए मिले। यह मेरी क्लोज-अप फोटो थी, जिसका मेकअप मैंने खुद किया था।

निमरत कौर ने इरफान खान के साथ 'लंचबॉक्स' आने से पहले मैंने चार साल तक थिएटर किया। एड से मुझे पैसे मिल रहे थे, पर एक अभिनेता के रूप में अनुभव नहीं मिल रहा था। मैंने नाटक देखना शुरू किए और ऐसे लोगों को खोजा, जिनके साथ मैं काम करना चाहती थी। पहले ही नाटक के लिए अवॉर्ड मिला। वे नाटक ही थे, जिन्होंने मुझे अभिनेत्री के रूप में आत्मविश्वास दिया। निमरत ने बताया कि मेरी मां का कहना है कि वहां तक तो आ चलिए ही, जहां तक आप चल सकते हैं। मैं नोएडा, दिल्ली से मुंबई चली गई और अपनी बचत से पोर्टफोलियो बनवाया। कुमार सानू और श्रेया घोषाल के म्यूजिक वीडियो के लिए काम मिला, जो एक नए चेहरे की तलाश में थे। इसमें मुझे पैसे कम मिले, पर इसके बाद मुंबई में काम मिलना शुरू हो गया।

निमरत ने आगे बताया कि तब मैं 11 वर्ष की थी, जब जबुल मुजाहिदीन के आतंकियों ने मेरे पिता भूपिंदर सिंह को अगवा कर उनकी हत्या कर दी थी। वे इंडियन आर्मी में थे, मैं अपने पिता से प्रेरित हूं। वे एक किसान परिवार से थे। पूरे दिन खेतों में काम करना और रात में पढ़ना। आत्मनिर्भरता का सबक मैंने उन्हीं से सीखा है।

हर कला की अपनी पहचान और खुशबू होती है- शोभना नारायण

'जब हम कोई काम दिल से करते हैं और उसमें सच्चाई होती है तो विषम परिस्थियां, विपरीत सोच वाला समाज भी साथ हो जाता है। सच्चाई, लगन और सही नजरिए से किए कार्य को स्वीकार किया जाता है। ऐसा मेरे साथ कई बार हुआ। मुझे आज भी याद है कि जब मेरे पिता का रेल दुर्घटना में निधन हुआ, तब परिवार में मां के साथ मैं और छोटी बहन ही थे। तब मैंने निर्णय लिया कि पिता को मुखाग्नि मैं ही दूंगी।1977 में मेरे द्वारा लिया गया निर्णय तब समाज ने स्वीकार, क्योंकि उसमें सच्चाई थी।' यह कहना है विश्वविख्यात कथक नृत्यांगना पद्मश्री शोभना नारायण का।

डॉ. पुरू दाधीच के 80वें जन्मदिन पर इंदौर में आयोजित कार्यक्रम में शिरकत करने आईं शोभाना नारायण ने चर्चा में कहा कि हैं व्यावसायिक जगत के कलाकारों का अपना प्रोफेशनलिज्म है। हमारे प्रोफेशन में तो सरस्वती को साथ रखने की बात की जाती है। लक्ष्मी तो आती -जाती रहती है।

शोभना नारायण ने बताया कि मेरा वास्तविक नाम तो शोभना ही है, मगर अंग्रेजी में लिखी जाने वाली स्पेलिंग में 'वी' आता है, इसलिए उसके अनुसार मुझे कई लोग शोवना भी कहते हैं। मेरे नाम का भी बड़ा दिलचस्प किस्सा है। मेरा जन्म कोलकाता में हुआ था। जब स्कूल में नाम लिखवाया तो नाम दर्ज करने वाला बांग्लाभाषी था और उसने 'भ' की बजाय 'व' लिख दिया। मां ने कहा कि जाने दीजिए यह नाम अलग है और अच्छा लग रहा है। इसलिए अंग्रेजी में तो 'शोभना' ही लिखना पसंद करती हूं।

शोभना ने कहा कि मैं चाहती हूं कि जिंदगी के अंतिम पलों तक नृत्य की साधना करती रहूं। 'आज रियाज शुरू करें और कल सम्मान मिल जाएं' यह सोच रखना सही नहीं है। मेहनत के बाद जो प्रशंसा मिलती है, वह अच्छी भी लगती है। इसलिए जो भी करें दिल से करें। और उसका रस लें।

शोभना नारायण ने बताया कि मैंने कभी फिल्मों में जाने का नहीं सोचा था। फिल्मों को लेकर कभी रुचि ही नहीं रही। जब मैं छोटी थी, तब मुझे फिल्म का ऑफर आया भी था। वास्तव में मेरी प्रस्तुति देखकर गायक हेमंत कुमार ने मुझे किसी फिल्म के लिए चुना। मगर मैंने मना कर दिया। आज भी मेरी सुनहरे पर्दे की और कोई दिलचस्पी नहीं है। पं.बिरजू महाराज से शिक्षा लेने से लेकर अब तक के सफर में कई नामी दिग्गजों का सानिध्य और सहयोग प्राप्त हुआ। मैंने पाया कि हर कलाकार की अपनी पहचान और खुशबू होती है और उसे यथावत रखना चाहिए। आप जितनी साधना करेंगे उतना ही फल आपको मिलेगा। अपनी कला में गहराई, सच्चाई और ईमानदारी से मेहनत करने की आवश्यकता है। यह सफर लंबा और खूबसूरत होता है। नहीं तो आप पानी के बुलबुले की तरह मिट जाएंगे।

नाट्यशास्त्र का गुजराती और मराठी में अनुवाद कर चुकी नृत्यांगना डॉ. संध्या पुरैचा ने कहा-

मैं संस्कृत के प्राचीन ज्ञान को पहुंचाना चाहती हूं आम जन तक

भरतनाट्यम शैली की नृत्यांगना डॉ.संध्या पुरैचा पिछले दिनों डॉ. पुरू दाधीच के सम्मान समारोह के सिलसिले में इंदौर आई थीं। मुंबई में पली-बड़ी गुजराती भाषी डॉ.पुरेचा ने बातचीत में बताया कि उन्होंने भरतनाट्यम के प्रख्यात गुरू पार्वती कुमार से 30 साल तक तालीम ली और उन्हीं के प्रोत्साहन से नाट्य शास्त्र पर काम शुरू किया। संस्कृत साहित्य में एम.ए. और पी-एच.डी. डॉ. पुरेचा ने नाट्यशास्त्र का गुजराती और मराठी अनुवाद किया है। उन्होंने नाट्यशास्त्र के करीब छःहजार श्लोकों के अनुवाद के साथ ही व्याख्या भी की है। मराठी और गुजराती में उनके अनुवाद के दो -दो वॉल्यूम आ चुके हैं और शेष भाग आने वाले हैं। अभी तक इन दोनों भाषाओं में नाट्यशास्त्र उपलब्ध नहीं था। इस अनुवाद से पहले वे नृत्य से संबंधित 10 पुस्तकें लिख चुकी हैं। डॉ. पुरेचा ने बताया कि नाट्यशास्त्र में नाट्य का अर्थ केवल नाटक नहीं है, बल्कि उसमें नृत्य, गायन, वादन और अभिनय आदि सब शामिल हैं। पांच हजार साल पहले आज की तरह नृत्य शैलियों के अलग नाम नही थे, लेकिननाट्यशास्त्र में भूगोल के कारण आने वाले परिवर्तनों पर संकेत किया गया है। इस लिहाज से नाट्यशास्त्र में उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम चार दिशाओं के अनुसार वृत्ति और प्रवृत्तियों में अंतर भी बताया गया है।

डॉ.पुरैचा कहती हैं, नाट्य शास्त्र इतना विस्तृत ग्रंथ है कि यह केवल कलाओं के बारे में ही नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की पूरी पद्धति है। नाट्यशास्त्र के अनुसार,त्रिलोक के समस्त भावों का अनुकरण ही नाट्य है। नाट्यशास्त्र में रस, भाव, अभिनय, वृत्ति, प्रवृत्ति, स्वर, रंगमंच सहित11 अंग बताए गए हैं, जिन्हें रस की प्राप्ति का साधन माना जाता है। नाट्यशास्त्र इन 11 अंगो का विस्तार से वर्णन करता है। नाट्यशास्त्र में अभिनय के चार प्रकार बताए गए हैं- आंगिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक । डॉ. पुरेचा ने कहा कि मैं अपनी पुस्तको और अनुवाद के जरिए संस्कृत के प्राचीन ज्ञान को आम जनता तक पहुंचाना चाहती हूं।

छः बार की विश्व चैंपियन ने प्रेसिडेंट कप में जीता स्वर्ण

छः बार की विश्व चैंपियन एमसी मैरीकॉम, अनंत प्रहलाद और नीरज स्वामी ने इंडोनेशिया में जारी 23वें प्रेसीडेंट्स कप मुक्केबाजी टूर्नामेंट के अपने-अपने भार वर्ग में स्वर्ण पदक अपने नाम किया। मैरीकॉम ने रविवार को ऑस्ट्रेलिया की अप्रैल फ्रैंक को करारी शिकस्त देकर स्वर्ण पदक जीता। मई में इंडिया ओपन में स्वर्ण पदक जीतने वाली मैरीकॉम ने टूर्नामेंट के 51 किलोग्राम भार वर्ग में फ्रैंक को 5-0 से शिकस्त दी। मैरीकॉम के अलावा नीरज स्वामी ने भी स्वर्ण पदक अपने नाम किया। नीरज ने 49 किग्रा वर्ग के फाइनल में फिलिपींस के एस.अकाद जूनियर को 4-1 से मात दी। नीरज का यह पहला पदक है। इसके अलावा अनंत प्रहलाद भी स्वर्ण पर कब्जा करने में सफल रहे। अनंत ने 52 किग्रा वर्ग के फाइनल में अफगानिस्तान के एस. रहमानी को 5-0 से शिकस्त देकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

स्पीक मैके के कार्यक्रम में सरोद वादक पार्थो सारथी ने कहा-

संगीत के माध्यम से ईश्वर के नजदीक आसानी से पहुंच सकते हैं

उज्जैन। स्पीक मैके के तत्वावधान में 25, 26 और 27 जुलाई को नगर की छः शिक्षण संस्थाओं में कोलकाता के पार्थो सारथी ने सरोद वादन के साथ विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय संगीत की विशेषताओं से परिचित कराया। उनके साथ तबला संगत आशीष पाल द्वारा की गई। पार्थो सारथी के व्याख्यान प्रदर्शन की प्रथम प्रस्तुति 25 जुलाई को शा.उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय माधव नगर में हुई, जहां प्राचार्य भरत व्यास ने उनका स्वागत किया और राजेश गंधरा ने आभार व्यक्त किया। भारतीय ज्ञानपीठ में सरोद वादक का स्वागत अमृता कुलश्रेष्ठ ने किया। संचालन छाया, महिमा जाटव और जैसमिन

बड़ोदिया ने किया, प्राचार्य तनुजा कदरे ने आभार माना।

स्पीक मैके के राज्य समन्वयक पंकज अग्रवाल ने बताया कि ज्ञानोदय विद्यालय, लालपुर शा.उ.मा. विद्यालय जालसेवा निकेतन, शा.उ.मा. विद्यालय क्षीरसागर और एम.आई.टी. में पार्थो सारथी के व्याख्यान प्रदर्शन हुए। पं. रवि शंकर के शिष्य पार्थो ने राग किरवानी, राग बसंत मुखारी और राग मलय मारूत आदि में अपना हुनर प्रदर्शित किया। पार्थो ने अपने व्याख्यान प्रदर्शन में कहा कि संगीत की सभी विधाओं का जन्म भारतीय शास्त्रीय संगीत से ही हुआ है। हमें शास्त्रीय संगीत की विरासत को बचा कर रखना होगा। संगीत के माध्यम से हम ईश्वर के नजदीक आसानी से पहुंच सकते है।

डॉ देवेन्द्र जोशी रतलाम प्रेस क्लब में सम्मानित

उज्जैन। 'पत्रकारिता में सफलता का कोई फार्मूला नहीं है। पत्रकार को अपने को पाठक से चार कदम आगे चलना होगा। तभी वह प्रतिस्पर्धा में टिक पाएगा। पाठक को साथ लिए बिना कोई अखबार ज्यादा लम्बी दूरी तय नहीं कर सकता। आज की पीढ़ी अखबार नहीं पढ़ती, इंटरनेट सर्च करती है। गूगल जो नहीं दे पा रहा वो अंचल के पत्रकारों को अपने पाठकों को देना होगा।'

यह विचार वरिष्ठ पत्रकार और साहित्यकार डॉ. देवेन्द्र जोशी ने रतलाम प्रेस क्लब में मालवा श्रमजीवी पत्रकार संघ द्वारा आयोजित पत्रकार एवं समाजसेवी सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। मुख्य अतिथि सुभाष जैन, विशेष अतिथि कान्तिलाल छाजेड तथा प्रदेश अध्यक्ष समीर पाठक ने भी आयोजन को सम्बोधित किया। अध्यक्षता सुशील जैन ने की।

इस अवसर पर डॉ. देवेन्द्र जोशी और डॉ. गणपत सिंह चौहान को उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए मानपत्र, पुष्पमाला और स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया। डॉ. देवेन्द्र जोशी ने सम्मान के प्रति धन्यवाद व्यक्त करते हुए कहा कि पत्रकारिता लोकतंत्र की आधार शिला और चौथा स्तंभ है तो पत्रकारों को तीनों अंगो की खामियों पर नजर रखनी होगी। पत्रकारिता से समाज में बदलाव आंचलिक पत्रकार ही ला सकते हैं।

ग्रामीण पत्रकारिता सकारात्मक और स्वस्थ पत्रकारिता का क्षेत्र है। ग्रामीण संवाददाता इसकी धुरी हैं। संचालन कवि-पत्रकार श्री खोकर ने किया। संयोजन, स्वागत महासचिव दीपक जैन ने किया।

सावन आया सवन के सरस गीतों से

उज्जैन। शनिवार के अल्ल सुबह से दोपहर तक बरखा रानी ने शहर के भूगोल को भिगाया और शाम को संकुल सभाग्रह में कलाकारों ने सरस संगीत की रिमझिम से संगीत और सावन प्रेमियों के मन को सरसाया। म्यूजिकल शो 'सावन को आने दो.' में टिप-टिप बरसा पानी..., लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है...., पतझड़ सावन बसंत बहार.... आया सावन झूम के..., सावन का महीना पवन करे सोर जैसे 24 गीतों की प्रस्तुतियां की गईं। गौरीशंकर दुबे, धीरज कुमार, सुशील गंगवाल, तृप्ति मित्तल, शक्ति सिंह, डॉ. पिंकेश डफरिया, राजेश सोनी, जयदीप शर्मा, अशोक पंवार, आकाश वाडिया, राजेश उमरेडकर आदि ने गीत सुनाए। कार्यक्रम संयोजन शीतल सिसौदिया ने और परिकल्पना व निर्देशन गौरीशंकर दुबे ने किया। कार्यक्रम में 'हमु काका बाबा ना पोरिया रे..' गीत फेम निमाड़ी गायक आनंदीलाल भावेल भी विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। कार्यक्रम के आखिर में उन्होंने 'हम् काका बाबा...', 'क्यों मारी रे क्यों पिटी रे..' जैसे लोकगीत सुनाए, जिन पर श्रोता झूम उठे। कार्यक्रम के दौरान डॉ. महेंद्र यादव, रेखा मेहता, कवि सूरज नागर, सपना सांखला, प्रमिला यादव एवं जिया हिंदवाल को कला सम्मान से सम्मानित किया गया। संचालन एंकर सोना राठौर ने किया।

उज्जैन की अभिलाषा रहीं ग्लोबल में फर्स्ट रनर-अप

उज्जैन। उज्जैन की डॉ. अभिलाषा ने राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित मिसेस इंडिया ग्लोबल-2019 में फर्स्ट रनर-अप का खिताब जीता है। पेशे से डेंटल सर्ज 33 वर्षीय डॉ अभिलाषा ग्लोबल-2019 मिससे टैलेंट विनर भी रहीं। खास बात यह है कि पहली बार ही यह डेंटल सर्जन मॉडलिंग के मंच पर पहुंची थीं। ग्वालियर की रहने वाली डॉ. अभिलाषा की 2010 में उज्जैन के डेंटल सर्जन डॉ. प्रद्युम्न मलिक से शादी हुई थी। पति डॉ. प्रद्युम्न ने बताया अभिलाषा को मॉडलिंग का शौक था।

कारगिल दिवस पर कवि सम्मेलन

उज्जैन। कारगिल दिवस पर क्राइम कंट्रोल एवं रिसर्च ऑर्गेनाईजेशन व जय नवयुवक मंडल जयसिंहपुरा द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन में गीतकार सतीश सागर, हरियाणा से आई कवियत्री अनिता सिंह, गीतकार आयर्न ऐरावत, कमल चौधरी, वीर रस के हाकम पांचाल, हिमांशु भावसार (भाभरा) व हिमांशु बवंडर ने अपनी रचनाओं की प्रस्तुति की।

अंदाज सुरों का

उज्जैन। संकुल हॉल में शनिवार की रात कनकशृंगा संस्कृति कला विकास समिति उज्जैन की ओर से फिल्मी गीतों का सांगीतिक कार्यक्रम 'अंदाज सुरों का..' आयोजित किया गया। कार्यक्रम में चंदन सा बदन... चलो सजना जहां तक..., कुरा मोहब्बत वाला अंखियों में ऐसा डाला..., झुमका गिरा रे..., ये दिल तुम बिन..., हम दोनों दो प्रेमी.... वो जब याद आए.... लागा चुनरी में दाग... सहित 27 सदाबहार गीत सुनाए गए। निर्देशक पक्न गरवाल ने बताया कलाकारों में प्रीति दीक्षित, जितेंद्र शिंदे, अनिमेष भट्ट, संध्या गरवाल, हीना उपाध्याय, हर्षदीप सोनाने, विवेक भारद्वाज, गुल खान, पूर्वेश जोशी, मीनाक्षी सरगम ने गीत सुनाए। मुख्य अतिथि विधायक डॉ. मोहन यादव थे। कार्यक्रम की शुरुआत में गायक पं. हेमंत व्यास और संगीतज्ञ कपिल यादें को विशेष कला सम्मान से सम्मानित किया गया। संचालन रोहित पांडे ने किया।

बहुमुखी कौशल उन्नयन पर ध्यान देना होगा

उज्जैन। प्रबंध की नई पीढ़ी के विद्यार्थियों को अपने कौशल सृजन पर व्यक्तित्व विकास के साथ अपने बहुमुखी कौशल उन्नयन पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। यह विचार इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विवि (इग्नू) के कुलपति प्रो. डॉ. नागेश्वर राव ने पं. जवाहरलाल नेहरू व्यवसाय प्रबंध संस्थान में आयोजित नाइन आईसीरी व्याख्यानमाला में व्यक्त किए।राष्ट्र के प्रबंध विशेषज्ञों द्वारा वर्तमान प्रबंध शिक्षा प्रणाली एवं उसके वर्तमान तथा भावी स्वरूप पर विचार-विमर्श किया गया। प्रो. राव ने इस तरह की व्याख्यान श्रृंखला को अत्यंत प्रासंगिक व समयानुकूल बताते हुए विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों से नवीनतम शिक्षण आयामों की खोज करने को प्रेरित किया। भोपालइंदौर विवि के पूर्व कुलपति प्रो. डॉ. पीके मिश्रा ने नए सोच के प्रयोगों को अत्यंत सावधानीपूर्वक तथागहन विचार-विमर्श के उपरांत ही प्रबंध शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाने के क्रियान्वयन पर जोर दिया। प्रो वायएस ठाकुर, प्रो ऋषि दुबे, डीडी बेदिया, डॉ. सचिन राय ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। अतिथि स्वागत डॉ. दीपक गुप्ता ने किया।

श्रावण उत्सव की दो सांस्कृतिक संध्याएं

उज्जैन। महाकाल प्रवचन गृह में श्रावण महोत्सव के दूसरे समागम में 28 जुलाई को गायन,वादन और नृत्य की प्रस्तुति युवा कलाकारों द्वारा की गई। डॉ. रोहित चावरे (उज्जैन) ने शास्त्रीय गायन में राग जोग की प्रस्तुति की। उनके साथ तबला पर पं. माधव तिवारी ने, हारमोनियम पर परमानन्द गंधर्व और तानपुरे पर वैभव पाठक व धनिशा धीमन द्वारा संगत की गई।

इन्दौर के दिव्येश महाराज ने पखावज पर अपना हुनर दिखाया। उनके साथ वायलिन पर पूर्णिमा राजपुरा ने संगत की।

डॉ. कविता ठाकुर (दिल्ली) ने कथक के लखनऊ घराने की बानगी अपने नृत्य में दिखाई। लावण्या अंबाडे (गायन), राहुल विश्वकर्मा (तबला), ब्रजेश मिश्रा (गायन) और साक्षी तिवारी (पढ़ंत) ने साथ निभाया।

श्रावण महोत्सव की प्रथम संध्या में पहली प्रस्तुति जबलपुर के विवेक कर्महे के शास्त्रीय गायन की हुई। कर्महे ने प्रस्तुति की शुरूआत राग श्री विलंबित लय ताल तिलवाडा की बंदिश वारी जाऊ रे तुम बिनु से की। उन्होंने मध्यलय तीन ताल में चलो री माई राम सिया दर्शन को.....की प्रस्तुति के बाद समापन राग मिश्रभैरव पर आधारित भजन शिव के मन सरन हो...? से किया। उनके साथ तबले पर हितेन्द्र दीक्षित, हारमोनियम पर, विवेक बंसोड, तानपुरे पर विजय गाडोदिया एवं चिन्मय नेमा ने संगत की। द्वितीय प्रस्तुति दिल्ली के श्री मेहताब अली के सितार वादन की हुई। उनके साथ तबले पर रामचन्द्र चौहान ने प्रभावी संगत की। मेहता बने अपनी प्रस्तुति की शुरूआत में राग गावती विलंबित लय तीनताल, मध्यलय, तीनताल, कुतलय तीनताल, आलाप, जोड झाला आदि की प्रस्तुति दी। प्रस्तुति के अंत में म्हदेव र आरती ऊ जय शिव ओमकारा की धुन प्रस्तुत की।

तृतीय एवं अंतिम प्रस्तुति दिल्ली की स्वाति सिन्हा के कथक नृत्य की हुई। प्रस्तुति का प्रारंभ राग पीलू ताल दादरा पर आधारित शिव वंदना रंगीला शंभू गौरा ले पधारों प्यारा पावणा..? से की तीन ताल में शुद्ध कथक में थाट, ततकार, उठान, परन, जयपुर घराने के शिव एवं कृष्ण पर आधारित कवित,चक्करदार तोडे (21 चक्कर, 31 चक्कर) की प्रस्तुति की। प्रस्तुति कासमापन राजस्थानी परंपरा की कृष्ण भक्त चन्द्र सखी की पद रचना उनके साथ योगेश गंगानी ने तबला, समीउल्ला खॉ ने गायन/पढ़ती मुद्दसीर खॉ ने सारंगी पर संगत की।

मेरी प्राथमिकता है शिक्षा व्यवस्था में सुधार करना- रमा नाहटे

उज्जैन। विगत दिनों पदस्थ हुई जिला शिक्षा अधिकारी रमा नाहटे ने सा.विक्रान्त भैरव दर्शन के संपादक विपुल जोशी से चर्चा में कहा कि शिक्षा विभाग के विकास के लिए कार्य करना और शिक्षा की व्यवस्था में सुधार करना ही मेरी प्राथमिकता है। उन्होंने चर्चा में कहा कि प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के भवन डीपीसी के अंतर्गत आते हैं। हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी विद्यालयों के लिए भवन निर्माण कार्य चल रहे हैं। विद्यालयों को नये भवनों में स्थानान्तरित किया जा रहा है। शिक्षकों को पढ़ाने के अलावा दूसरे कार्यो में भेजने के सवाल पर रमा नाहटे ने जवाब दिया कि शिक्षकों को पढ़ाई के अलावा निर्वाचन कार्यों में भेजा जाता है।

इसके अलावा शासन से जैसे निर्देश मिलते हैं, उनका पालन किया जाता है। रमा नाहटे ने बताया कि उनका जन्म उज्जैन में ही हुआ। उन्होंने एम.ए. और एम.एड. की उपाधि प्राप्त की है। वे पूर्व में प्रभारी सहायक संचालक, उज्जैन संभाग के पद पर कार्य कर चुकी हैं। जिला शिक्षा अधिकारी के रूप में रमा नाहटे की यह पहली पदस्थापना है।

साप्ताहिक विक्रान्त भैरव दर्शन

प्रधान सम्पादक
राजेन्द्र जोशी

सम्पादक
विपुल जोशी

कार्यकारी सम्पादक
डॉ.पांखुरी वक़्त जोशी

सम्पादकीय सलाहकार
डॉ. रमेश आर्य
डॉ.देवेन्द्र जोशी

सहसम्पादक
मनोज राठौर

विधि परामर्शदाता
प्रणव गर्ग

ब्योरो प्रमुख
नंदिनी शर्मा-दिल्ली

उत्सव वक़्त-मुम्बई
दीप्ति जोशी व्यास-बंगलूरू
अमरेश शर्मा-भोपाल
डॉ.विनायक करूण-इन्दौर

सहायक
शिवानी पाटीदार
रूबी खान

संस्थापक/समन्वयक
अशोक वक़्त

स्वत्वाधिकारी, स्वामी, संपादक, प्रकाशक - विपुल जोशी, 7, चंद का कुआं, उज्जैन से प्रकाशित एवं मेहरजान प्रिंटिंग प्रेस, कमरी मार्ग, उज्जैन से मुद्रित। प्रधान सम्पादक - राजेन्द्र जोशी, फोन 0734-2552323, 9425380265 (सभी विवादों का न्यायक्षेत्र उज्जैन है।) ई-मेल : vikrantbhairavdarshan@rediffmail.com